राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

स्वतंत्र प्रभात

@swatantraprabhatmedia @swatantramedia RNI.No. UHIN/2012/43078 (epaper.swatantraprabhat.com) @SwatantraPrabhatonline news@swatantraprabhat.com

सीतापुर से प्रकाशित एंव अयोध्या ,प्रयागराज ,मिर्जापर ,गोरखपुर , बरेली ,बुंदेलखंड , उत्तराखंड , देहरादून

सीतापुर, शुक्रवार , 10 अप्रैल 2026

वर्ष 14,अंक 349, पृष्ट 04, मूल्यः 01 रुपया

www.swatantraprabhat.com

गाज़ियाबाद , दिल्ली , हरियाणा , चंडीगढ़ , झारखण्ड , बिहार , मध्य प्रदेश ,असम, तेलंगाना आदि जनपदो में प्रसारित

स्वतंत्र प्रभात दैनिक अख़बार तथा ऑनलाइन चैनल से सीधा जुड़ने के लिए संपर्क करें.....
9511151254

शिक्षक खुद को जलाकर फैलाता है ज्ञान का प्रकाशः बीएसए..03

अमेरिका-ईरान युद्धविराम के बीच बोले पीट हेगसेथ- ईरान का भविष्य हमारे हाथों में है..04

ईरान से किसी तरह सीजफायर कराओ, अमेरिका ने पाकिस्तान को जबरन घसीटा

ईरान-अमेरिका सीजफायर में पाकिस्तान गाल बजा रहा है. दुनिया को यह बताने की कोशिश में लगा है कि उसके चलते ही सीजफायर हुआ. वही सरपंच है. उसने ही अमेरिका और ईरान के बीच जंग रुकवाई. पाकिस्तान की मध्यस्थता और कूटनीति से ही युद्ध पर पॉज बटन दब पाया. मगर अब उसकी पोल खुल गई है. जी हां, पाकिस्तान ने अपनी मर्जी से नहीं, बल्कि प्रेशर में ईरान-अमेरिका के बीच टेंपररी सीजफाय कराया था. दरअसल, एक रिपोर्ट सामने आई है, जिससे अमेरिका और ईरान के बीच एक टेंपररी सीजफाय करवाने में पाकिस्तान की भूमिका पर अब सवाल उठ रहे हैं. रिपोर्ट में दावा किया गया है कि इस सीजफायर वाले पहल के पीछे पाकिस्तान की अपनी स्वतंत्र कूटनीति नहीं थी. असलियत यह है कि अमेरिका ने ही पाकिस्तान पर दबाव बनाया था कि ईरान से किसी तरह टेंपररी सीजफायर करवाओ. इसके पीछे अमेरिका का डर तेल की कीमतों में आग थी।

दरअसल, शहबाज शरीफ और मुनीर ने अपने मन से या अपनी कूटनीति का परिचय देकर यह काम नहीं किया. बल्कि अमेरिका के कहने पर रट्टू तोता की तरह काम किया. अमेरिका ने जो-जो कहा, पाकिस्तान ने केवल उतना ही किया. इसमें उसकी इससे अधिक कोई भूमिका नहीं है. 'फाइनेंशियल टाइम्स' की एक रिपोर्ट के अनुसार, अमेरिका ने इस्लामाबाद पर दबाव डाला कि पाकिस्तान तेल की बढ़ती कीमतों और वैश्विक ऊर्जा आपूर्ति की स्थिरता को लेकर बढ़ती चिंताओं के बीच मध्यस्थ की भूमिका निभाए. इस प्रयास का मुख्य मकसद ईरान को लड़ाई रोकने और 'स्ट्रेट ऑफ होर्मुज' (Strait of Hormuz) को फिर से खोलने के लिए राजी करना था. बता दें कि होर्मुज तेल परिवहन का एक बेहद अहम वैश्विक मार्ग है।

ईरान-अमेरिका सीजफायर में पाकिस्तान का क्या रोल

रिपोर्ट में मामले से जुड़े लोगों के हवाले से कहा गया है कि पाकिस्तान ने मुख्य रूप से अमेरिकी संदेशों को पहुंचाने के लिए चैनल के रूप में काम किया और तेहरान को ऐसे प्रस्ताव दिए जो ईरानी नेतृत्व के लिए अधिक स्वीकार्य हों. पाकिस्तान की भूमिका थी कि वह इस समझौते को एक मुस्लिम बहुल देश की ओर से पेश करे, ताकि तेहरान को यह अधिक स्वीकार्य लगे।

पाकिस्तान केवल तोता था

इसलिए पाकिस्तान की भागीदारी शांति की शर्तों को तय करने के बारे में कम और कहीं और तैयार किए गए संदेश को पहुंचाने

को लेकर अधिक थी. इस व्यवस्था ने अमेरिका को संघर्ष के एक संवेदनशील मोड़ पर सीधे टकराव से बचते हुए भी दबाव बनाए रखने में मदद की।

पाकिस्तान अपनी मर्जी से मध्यस्थ नहीं बना

रिपोर्ट में पाकिस्तान की स्वतंत्र कूटनीतिक स्थिति पर गंभीर सवाल उठाए गए हैं, क्योंकि इसमें कहा गया है कि इस्लामाबाद तटस्थ मध्यस्थ नहीं था, बल्कि वाशिंगटन के लिए अस्थायी युद्धविराम समझौता आगे बढ़ाने का सुविधाजनक चैनल था. अमेरिका ने ईरान के खिलाफ अपना रुख कड़ा किया, वहीं इस्लामाबाद ने तेजी से मध्यस्थ के रूप में खुद को पेश किया, लेकिन ज्यादातर ऐसे प्रस्ताव दिए जो अमेरिकी रणनीतिक हितों के अनुरूप थे, न कि कोई स्वतंत्र या संतुलित शांति पहल।

पर्दे के पीछे पाकिस्तान पर अमेरिका का था प्रेशर

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने पहले दो सप्ताह के युद्धविराम की घोषणा की थी और ईरान के प्रस्ताव को वार्ता के लिए व्यावहारिक आधार बताया था. लेकिन हकीकत यह है कि पर्दे के पीछे वाशिंगटन कई हफ्तों से इस्लामाबाद पर युद्धविराम सुनिश्चित करने के लिए दबाव डाल रहा था।

मुनीर ने बैकचैनल से की बात

पाकिस्तान के सेना प्रमुख फील्ड मार्शल असीम मुनीर ने बैकचैनल कूटनीति में अहम भूमिका निभाई और डोनाल्ड ट्रंप, उपराष्ट्रपति जेडी वेंस और विशेष दूत स्टीव विटकॉफ सहित वरिष्ठ अमेरिकी अधिकारियों से कई बार बातचीत की. पाकिस्तान ने सार्वजनिक रूप से खुद को तटस्थ शांति निर्माता के रूप में पेश किया, लेकिन रिपोर्ट के अनुसार उसकी भूमिका सीमित थी, वह समझौते की शर्तें तय करने के बजाय अमेरिकी प्रस्तावों को पहुंचाने का माध्यम था. इस्लामाबाद ने कथित तौर पर अमेरिका द्वारा तैयार रूपरेखा साझा की, ईरान की प्रतिक्रियाएं अमेरिका तक पहुंचाई और युद्धविराम की समयसीमा पर चर्चा की।

घुसपैठियों को खदेड़ा जाएगा, उनके आका जेल भेजे जाएंगे... बीरभूम में पीएम मोदी की हुंकार

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बीरभूम में जनसभा को संबोधित करते हुए कहा कि घुसपैठियों को भी खदेड़ा जाएगा और घुसपैठियों के जो आका हैं, उन्हें जेल में भरा जाएगा. पीएम मोदी ने कहा कि सरकारी योजना हो या मजदूरी का काम हो. घुसपैठिए कम पैसे में काम यहां के लोगों से छीन लेते हैं और यहां के लोकल लोगों को काम की तलाश में कहीं और जाना होता है और पलायन करना होता है. अब यह नहीं चलेगा.

पीएम मोदी ने कहा कि रामपुर हाट की क्या स्थिति है, ये आप सभी प्रत्यक्ष देख ही रहे हैं मालदा में बीते दिनों क्या हुआ... ये भी पूरे देश ने देखा. स्कूल के काम में लगे जो न्यायाधीश हैं... उनको तक, बंधक बना दिया गया. इस भय से बंगाल के मानुष को मुक्ति दिलानी जरूरी है.. मां, माटी और मानुष में से मां की स्थिति और भी खराब है. पीएम मोदी ने कही कि एससी, एसटी और ओबीसी समाज के बेटियों के लिए जीना मुश्लिक हो गया है. टीएमसी देश की पहली महिला आदिवासी राष्ट्रपति का आपमान कर सकती है. उसकी मानसिकता क्या होगी? उन्होंने कहा कि अहंकारी टीएमसी सरकार देश की राष्ट्रपति को कुछ भी नहीं समझती. इसलिए कि वो राष्ट्रपति आदिवासी समाज की बेटी है

और आपको अपमान करने का हक मिल जाता है. यह देश के सभी आदिवासियों और महिला का अपमान है. उन्होंने कहा कि टीएमसी के राज में कच्चे बम के निर्माण को कुटीर उद्योग बना दिया है. टीएमसी के राज में कुटीर और लघु उद्योग बंद हो रहे हैं और कच्चे बम के उद्योग बढ़ रहे हैं, लेकिन अब यह नहीं चलेगा. उन्होंने कहा कि अब इसे लेकर चुप नहीं रहेगा।

बंगाल से सिंडिकेट राज का खात्मा होगा

उन्होंने कहा कि भाजपा को वोट दीजिए. बंगाल में भी रोजगार मेला भी शुरू होगा और बंगाल के कर्मचारियों को सातवें पे कमीशन का लाभ देगी. उन्होंने कहा कि जमीन के अंदर प्राकृतिक संपदा का भंडार है, लेकिन टीएमसी की सिंडिकेट लूट रही है.उन्होंने कहा कि चार मई को टीएमसी जाएगी और भाजपा आएगी. उन्होंने कहा कि 75000 करोड़ रुपए की परियोजना केंद्र सरकार लाई है, लेकिन टीएमसी सरकार रोक कर रखी है. डबल इंजन सरकार बनने के बाद ऐसी कई परियोजनाएं शुरू होगी. उन्होंने कहा कि बीजेपी की सरकार बनाइए. गरीबों को रोजगार मिलेगा और राज्य में कोई कटमनी और सिंडिकेट नहीं होगा।

बंगाल में नौकरियां लूटने का खेल चल रहा

पीएम मोदी ने कहा कि युवा पश्चिम बंगाल की बेरहम ज़ख्ष्ट सरकार की विदाई तय करने जा रहे हैं. 23 अप्रैल और 29 अप्रैल को, उन युवाओं द्वारा जवाब दिया जाएगा, जिन्होंने पिछले सालों में TMC सरकार के तहत लाठीचार्ज और दर्द झेला है. उन्होंने कहा कि पश्चिम बंगाल में, यह कोई रोजगार मेला नहीं है; यह नौकरियां लूटने का खेल चल रहा है. टीचर भर्ती घोटाले ने... हजारों परिवारों के सपनों को कुचल दिया है. इसने लाखों युवाओं को डरा दिया है, उन्हें डर से भर दिया है. पीएम मोदी ने कहा कि आज, केंद्र सरकार पूरे देश में रोजगार मेले लगाती है, जहां भी BJP की सरकारें हैं, वहां भी रोजगार मेले लगते हैं. इस पहल के तहत, लाखों युवाओं को सरकारी नौकरियों के लिए अपॉइंटमेंट लेटर बांटे जाते हैं. सिर्फ पिछले 2-2.5 सालों में, इन रोजगार मेलों के माध्यम से 17 लाख से ज़्यादा सरकारी नौकरियां दी गई हैं. उन्होंने कहा कि जिन-जिन लोगों ने बंगाल को लूटा है, चुन-चुनकर हिसाब किया जाएगा।

संक्षिप्त ख़बरें

चुनाव से पहले यूपी में सक्रिय हुए मुकेश सहनी, निषाद आरक्षण को लेकर 11 अप्रैल को लखनऊ में शक्ति प्रदर्शन

उत्तर प्रदेश में 2027 में होने वाले विधानसभा चुनाव के पहले विकासशील इंसान पार्टी के संस्थापक और बिहार सरकार के पूर्व मंत्री मुकेश सहनी ने अपनी सक्रियता बढ़ा दी है. सहनी लखनऊ में आयोजित होने वाले कार्यकर्ता सम्मेलन में हिस्सा लेंगे. कार्यक्रम का आयोजन 11 अप्रैल को किया गया है. पार्टी के राष्ट्रीय प्रवक्ता देव ज्योति ने गुरुवार को राजधानी में एक बयान जारी करते हुए यह कहा कि मुकेश सहनी यूपी में निषाद आरक्षण की लड़ाई को धार देने 11 अप्रैल को लखनऊ पहुंचेंगे. अब यूपी में निषाद आरक्षण की लड़ाई होगी उन्होंने कहा कि सहनी उत्तर प्रदेश में निषाद आरक्षण की लड़ाई को और गति देने के लिए यूपी पहुंच रहे हैं. वे यहां कार्यकर्ताओं और समाजसेवियों से भी मुलाकात करेंगे।

11 अप्रैल को लखनऊ में करेंगे कार्यकर्ता सम्मेलन

मुकेश सहनी 11 अप्रैल को लखनऊ में विशाल कार्यकर्ता सम्मेलन में हिस्सा लेंगे. लखनऊ में आयोजित कार्यकर्ता सम्मेलन के माध्यम से वे कार्यकर्ताओं में नई ऊर्जा का संचार करेंगे एवं निषाद आरक्षण के लिए अपनी लड़ाई को धार देंगे।

देव ज्योति ने यह भी कहा कि यूपी सरकार ने निषाद आरक्षण को पिछले चुनाव के दौरान अनुशंसा की थी, लेकिन उसके बाद उसे ठंडे बस्ते में डाल दिया गया. उस समय निषादों को सब्जबाग दिखलाया गया था. मुकेश सहनी इस क्रम में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से यह सवाल भी पूछेंगे कि जब यूपी में डबल इंजन की सरकार है तो आखिर निषादों को आरक्षण अब तक क्यों नहीं दिया जा सका?

यूपी चुनाव से पहले VIP ने तैयारी की तेज

ज्ञात हो कि विकासशील इंसान पार्टी महा गठबंधन का एक हिस्सा है. विकासशील इंसान पार्टी ने पिछले साल बिहार में हुए विधानसभा चुनाव में महागठबंधन के बैनर तले अपने उम्मीदवारों को चुनाव मैदान में उतारा था. हालांकि पार्टी के किसी भी उम्मीदवार को जीत नहीं मिली थी. लखनऊ में आयोजित कार्यक्रम कार्यकर्ता सम्मेलन में मुकेश सहनी द्वारा हिस्सा लेने की पहल को 2027 में होने वाले विधानसभा चुनाव की तैयारी के रूप में देखा जा रहा है।

UP- महापुरुषों की मूर्तियों को नहीं पहुंचा पाएगा कोई नुकसान, मंत्री अनिल कुमार बोले- योजना को कैबिनेट की मंजूरी

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

उत्तर प्रदेश की योगी सरकार ने महापुरुषों के सम्मान और कानून व्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए एक ऐतिहासिक निर्णय लिया है, जिसको लेकर मुरादाबाद जिले के प्रभारी मंत्री अनिल कुमार ने बताया कि कैबिनेट बैठक में डॉ. बी.आर. अंबेडकर सहित अन्य महापुरुषों की सार्वजनिक प्रतिमाओं के सौंदर्यीकरण और सुरक्षा के लिए भारी बजट को मंजूरी दी गई है. अक्सर असामाजिक तत्वों द्वारा मूर्तियों को खंडित करने से उपजे विवाद और बिगड़ती कानून व्यवस्था को देखते हुए अब इन स्थलों पर बाउंड्री वॉल और छज्जे का निर्माण कराया जाएगा, इस योजना के प्रथम चरण में प्रत्येक विधानसभा क्षेत्र के लिए एक करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है. मंत्री अनिल कुमार ने स्पष्ट किया कि इस कदम से न केवल दलित और बहुजन महापुरुषों का सम्मान सुरक्षित होगा, बल्कि प्रदेश में आपसी भाईचारा भी बना रहेगा. अनिल कुमार ने इसे 9 वर्षों से जारी विकास यात्रा का एक महत्वपूर्ण पड़ाव

बताया।

विपक्ष पर हमला और NDA की मजबूती

प्रभारी मंत्री अनिल कुमार ने विपक्षी दलों पर तीखा प्रहार करते हुए कहा कि सपा सांसद रुचि वीरा के पास अब जनता को बताने के लिए कुछ शेष नहीं है, इसलिए वे केवल बयानबाजी कर रही हैं. उन्होंने अखिलेश यादव के PDA फॉर्मूले को भ्रमित करने वाला बताया और कहा कि जनता 2012 से 2017 के बीच के कुशासन को भूली नहीं है. मंत्री ने दावा किया कि असम और पश्चिम बंगाल सहित पूरे देश में NDA गठबंधन अत्यंत मजबूत स्थिति में है. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विकास कार्यों के दम पर आगामी चुनावों में गठबंधन ऐतिहासिक जीत दर्ज करेगा, क्योंकि देश की जनता अब केवल विकास और राष्ट्रवाद की राजनीति पर विश्वास कर रही है।

'300 से अधिक सीटें जीतेगा NDA'

मंत्री ने उत्तर प्रदेश की योगी सरकार की उपलब्धियों को गिनाते हुए कहा कि 2017 के बाद से प्रदेश में कानून व्यवस्था और बुनियादी ढांचे में क्रांतिकारी बदलाव आए हैं. इसी का परिणाम है कि जनता ने दोबारा बीजेपी पर भरोसा जताया. अनिल कुमार ने आगामी विधानसभा चुनाव को लेकर बड़ा दावा करते हुए कहा कि NDA 300 से अधिक सीटें जीतकर पुनः सरकार बनाएगी. सरकार का मुख्य लक्ष्य समाज के सभी वर्गों तक सरकारी योजनाओं का लाभ पहुंचाना और महापुरुषों की विरासत को सहेजना है. अनिल कुमार ने विश्वास जताया कि ऐतिहासिक जनसमर्थन के साथ उत्तर प्रदेश में विकास का नया अध्याय लिखा जाएगा।

111 विधायकों के मुंह पर ताला लगा है... AIMIM नेता का सपा पर बड़ा हमला

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

मुरादाबाद में आयोजित AIMIM की बैठक में प्रदेश अध्यक्ष शौकत अली के हालिया विवादित बयान पर सफाई देते हुए पार्टी नेता शादाब चौहान ने विपक्षी दलों को आड़े हाथों लिया है. शादाब चौहान ने कहा कि शौकत अली के बयान का संदर्भ चाहे जो भी हो, लेकिन आज की कड़वी सच्चाई यह है कि उत्तर प्रदेश विधानसभा में बैठे 111 विपक्षी विधायकों के मुंह पर ताला लगा हुआ है. उन्होंने आरोप लगाया कि चाहे मॉब लिंचिंग की घटनाएं हों, कुरैशी समाज पर हमले हों या वक्फ और धार्मिक स्थलों को निशाना बनाने का मामला, ये विधायक पूरी तरह खामोश रहते हैं।

शादाब ने कहा कि अगर सदन में मजलिस के 11 विधायक भी पहुंच गए, तो वे मुख्यमंत्री की आंख में आंख डालकर बात करेंगे. बैठक के दौरान 2027 के विधानसभा चुनाव का रोडमैप साझा करते हुए चौहान ने बताया कि पार्टी ने अब तक 50 लाख सदस्य जोड़ लिए हैं. अब बूथ स्तर पर संगठन को मजबूत किया जा रहा है, जून माह से बैरिस्टर असदुद्दीन ओवैसी के दौरों की शुरुआत के साथ ही चुनावी बिगुल फूंक दिया जाएगा. शादाब ने समाजवादी पार्टी को 'भाजपा की मददगार' बताते हुए कहा कि अखिलेश यादव के पास मुस्लिम समाज को नेतृत्व देने के लिए बड़ा दिल नहीं है. मुरादाबाद और रामपुर के मौजूदा सांसदों को 'मैच फिक्सिंग' का

खिलाड़ी बताते हुए उन्होंने जनता से अपील की कि वे अब इस 'सियासी गुलामी' से बाहर निकलकर अपने हक के लिए मजलिस का साथ दें।

शौकत अली और 111 विधायकों की चुप्पी पर क्या?

शौकत अली जी के बयान का संदर्भ अलग हो सकता है, लेकिन हमारा मकसद साफ है. आज सदन में मौजूद 111 विधायकों के मुंह पर ताला लगा हुआ है. चाहे मुसलमानों की मॉब लिंचिंग हो, कुरैशी भाइयों पर हमला हो या वक्फ का मामला, ये सब चुप हैं. उन्होंने कहा कि अगर कोई आवाज उठा रही है, तो वह हमारी पार्टी है. हमारे 11 विधायक भी होंगे, तो हम मुख्यमंत्री की आंख में आंख डालकर बात करेंगे, हम डरते नहीं हैं।

संगठन और 2027 की तैयारी

शादाब ने कहा कि हमने अब तक 50 लाख सदस्य बनाए हैं और अब बूथ स्तर पर सक्रिय सदस्यता अभियान चल रहा है. जून तक तमाम तैयारी करके हम बैरिस्टर साहब (असदुद्दीन ओवैसी) के दौरे शुरू करवाने वाले हैं. 2027 के विधानसभा चुनाव में मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन बहुत ही प्रभावशाली तरीके से लड़ेगी. हमारे पास प्रत्याशियों के निरंतर आवेदन आ रहे हैं और कई बड़े नेता हमारे संपर्क में हैं।

अखिलेश यादव और सपा पर साधा निशाना

शादाब ने कहा कि क्या मुसलमान वोटों पर सपा का बैनामा हो गया है? क्या मुस्लिम समाज इनका सियासी गुलाम है? 7% आबादी वालों को हमने चार बार मुख्यमंत्री बनाया, तो क्या अब अखिलेश जी 20% वालों को मुख्यमंत्री बनाने में सहयोग देंगे? समर्थन देने के लिए बड़ा दिल चाहिए होता है, जो उनके पास नहीं है. समाजवादी पार्टी वालों पर मुकदमे नहीं होते क्योंकि वे भाजपा से मिले हुए हैं.उन्होंने कहा कि हमनें 200 सीटों पर बूथ कमेटियां बना ली हैं. हमारी इच्छा है कि दलित, मुस्लिम और शोषित-वंचित समाज साथ आए. सत्ता में आने पर हम प्रदेश में पूर्ण शराबबंदी लागू करना चाहते हैं क्योंकि शराब से बहुत नुकसान होता है. जनता को मूल सुविधाएं मिलनी चाहिए और हम ऐसी सरकार चाहते हैं जो जरूरतमंदों के साथ खड़ी हो.

सांसद रुचि वीरा और मोहिबुल्लाह नदवी पर क्या?

मुरादाबाद और रामपुर के सांसद एम्स हॉस्पिटल के नाम पर सिर्फ ड्रामा कर रहे हैं. यह सब 'मैच फिक्सिंग' है. वोट हमारा और सांसद उनका? जब सपा की सरकार थी, तब इन्होंने क्या काम किया? रुचि वीरा ने वंदे मातरम और मुस्लिम हितों के मुद्दों पर लोकसभा में क्या स्टैंड लिया है? ये लोग केवल जनता को गुमराह कर रहे हैं।

MP के छतरपुर में कोर्ट रूम में बवाल, महिला टाइपिस्ट को जड़ दिया थप्पड़; आरोपी गिरफ्तार

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

मध्य प्रदेश के छतरपुर जिले में जिला न्यायालय परिसर में गुरुवार को उस समय हड़कंप मच गया, जब प्रथम श्रेणी न्यायाधीश की कोर्ट में एक महिला टाइपिस्ट के साथ मारपीट की घटना सामने आई. प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक, प्राइवेट तौर पर टाइपिंग का काम करने वाला आशीष रिछारिया अचानक विवाद के दौरान आपा खो बैठा और उसने महिला कर्मचारी को न्यायाधीश की मौजूदगी में ही थप्पड़ मार दिया. घटना होते ही कोर्ट रूम में अफरा-तफरी मच गई. मौजूद लोगों ने तुरंत पुलिस को सूचना दी।

जानकारी के मुताबिक, आरोपी आशीष रिछारिया और महिला टाइपिस्ट के बीच फाइल छीनने और गलत नियत से छूने को लेकर विवाद हुआ था और अचानक दोनों में बहस शुरू हो गई. बहस इतनी बढ़ गई की आशीष रिछारिया ने महिला को थप्पड़ जड़ दिया. इस दौरान न्यायालय परिसर में अफरा-तफरी मच गई. वहां मौजूद लोगों ने दोनों को अलग करने और समझाने की कोशिश की, जिसके बाद मामला शांत हुआ. वहीं पीड़ित महिला टाइपिस्ट ने आरोपी आशीष रिछारिया के खिलाफ पुलिस से

शिकायत की सूचना दी. मौके पर पहुंची पुलिस मामले में जानकारी जुटाने में जुट गई।

आरोपी युवक गिरफ्तार

सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची पुलिस ने आरोपी युवक को हिरासत में लेकर थाने ले गई. न्यायालय जैसे संवेदनशील और सुरक्षित माने जाने वाले परिसर में इस तरह की घटना ने सुरक्षा व्यवस्था पर सवाल खड़े कर दिए हैं. खास बात यह है कि पूरी घटना न्यायाधीश की मौजूदगी में हुई, जिससे कोर्ट की गरिमा को भी ठेस पहुंची है. पुलिस मामले की जांच कर रही है।

पीड़ित महिला एससी समाज की बताई जा रही है. महिला ने आरोप लगाया है कि आरोपी आशीष रिछारिया ने उससे फाइल छीनने की कोशिश की और उसे गलत नियत से छूने का प्रयास किया, जिसके बाद उसने विरोध किया तो विवाद बढ़ गया. वहीं पुलिस ने महिला के साथ छेड़छाड़ करने और उसे परेशान करने के मामले में आरोपी के खिलाफ एससी-एसटी एक्ट के तहत केस दर्ज करने की बात कह रही है।

कार्रवाई में जुटी पुलिस

एडिशनल एसपी आदित्य पटेल ने बताया कि घटना की सूचना मिलते ही पुलिस टीम मौके पर पहुंची और आरोपी को गिरफ्तार कर लिया. उन्होंने कहा कि पीड़िता की शिकायत के आधार पर आगे की वैधानिक कार्रवाई की जाएगी. फिलहाल पुलिस पूरे मामले की जांच में जुटी हुई है और घटना के कारणों का पता लगाया जा रहा है।

भाजपा सरकार में राज्य भयमुक्त होकर विकास की राह पर आगे बढ़ रहा है: बृजेश पाठक

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

आजमगढ़- उत्तर प्रदेश के उपमुख्यमंत्री बृजेश पाठक ने सपा सरकार पर निशाना साधते हुए कहा कि प्रदेश की जनता ने पूर्ववर्ती सरकार के दौरान अराजकता और भय का माहौल देखा है, जबकि वर्तमान में योगी सरकार के नेतृत्व में राज्य भयमुक्त होकर विकास की राह पर आगे बढ़ रहा है। उपमुख्यमंत्री गुरुवार को आजमगढ़ जिले के बड़सर खालसा गांव पहुंचे, जहां उन्होंने भाजपा के प्रदेश उपाध्यक्ष एवं विधान परिषद सदस्य (एमएलसी) विजय बहादुर पाठक के पिता के निधन पर शोक व्यक्त करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की। उन्होंने शोक संतप्त परिवार को ढांढस बंधाते हुए कहा कि पार्टी इस कठिन समय में उनके साथ खड़ी है। पाठक ने पत्रकारों से बातचीत में कहा

कि वर्ष 2017 से पहले प्रदेश में अपराध और अराजकता का माहौल था, लेकिन अब स्थिति बदल चुकी है। उन्होंने कहा कि वर्तमान सरकार में अपराधियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जा रही है और वे या तो जेल में हैं या प्रदेश छोड़कर भाग चुके हैं।

श्रद्धांजलि सभा के बाद उपमुख्यमंत्री ने बड़सर खालसा स्थित प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र का निरीक्षण किया। उन्होंने साफ-सफाई, दवाओं की उपलब्धता और स्वास्थ्य सेवाओं की स्थिति का जायजा लिया तथा मरीजों से बातचीत कर फीडबैक प्राप्त किया। इस दौरान उन्होंने डॉक्टरों को बेहतर चिकित्सा सुविधाएं सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार का उल्लेख करते हुए कहा कि प्रदेश में मेडिकल कॉलेजों की संख्या बढ़ाई जा रही है और डॉक्टरों की भर्ती से व्यवस्था मजबूत हो रही है। मरीजों के साथ दुर्व्यवहार के मामलों में सख्त कार्रवाई की बात कहते हुए उन्होंने एक प्रकरण में पूर्व जांच रिपोर्ट को निरस्त कर उच्चस्तरीय जांच के आदेश दिए। अवैध नर्सिंग होम के मुद्दे पर उन्होंने त्वरित कार्रवाई का आश्वासन देते हुए पारदर्शिता की बात कही। इस अवसर पर प्रदेश के कृषि मंत्री सूर्य प्रताप शाही, खेल मंत्री गिरीश यादव सहित अन्य जनप्रतिनिधि और पार्टी पदाधिकारी भी मौजूद रहे।

मानवता और ज्ञान के प्रकाश को प्रभावित करती महायुद्ध की काली छाया

बच्चे, बूढ़े और महिलाएं सर्वाधिक प्रभावित।

महात्मा गांधी ने अहिंसा को मानवता का सबसे बड़ा अस्त्र बताया था,उनका प्रसिद्ध कथन है कि 'आँख के बदले आँख पूरी दुनिया को अंधा बना देगी।' उन्होंने यह भी कहा कि 'अहिंसा मानवता का परम धर्म है,' और यह स्पष्ट किया कि स्थायी शांति केवल सत्य और अहिंसा के मार्ग से ही संभव है, न कि युद्ध से। ज्ञान, संवेदना और मानवता से परे जब महायुद्ध की आहट सुनाई देती है, तब केवल सीमाओं का विस्तार या सत्ता का संघर्ष नहीं होता, बल्कि पूरी मानव सभ्यता अपनी आत्मा के संकट से गुजरती है। यह वही समय होता है जब विज्ञान, जो मानव कल्याण का साधन होना चाहिए था, विनाश का औजार बन जाता है और ज्ञान, जो प्रकाश फैलाने के लिए था, अंधकार को और गहरा कर देता है। आज का महायुद्ध केवल बंदूकों और बमों तक सीमित नहीं रहा, यह तकनीक, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, साइबर हमलों और परमाणु शक्ति के रूप में इतना भयावह हो चुका है कि इसका परिणाम केवल हार-जीत नहीं, बल्कि सम्पूर्ण मानवता के अस्तित्व का प्रश्न बन गया है। गौतम बुद्ध ने करुणा और शांति को जीवन का मूल आधार माना था, उनका संदेश था घृणा से घृणा कभी समाप्त नहीं होती, प्रेम से ही समाप्त होती है। यह विचार बताता है कि युद्ध की आग को केवल प्रेम और समझदारी से ही बुझाया जा सकता है। जब एक देश अपनी शक्ति का प्रदर्शन करता है, तो वह केवल अपनी सीमाओं की रक्षा नहीं करता, बल्कि अनजाने में दूसरे देशों के लिए भय, असुरक्षा और विनाश का कारण भी बन जाता है। यही शक्ति संतुलन की असमानता महायुद्ध की नींव रखती है, जहाँ एक का सामर्थ्य दूसरे के लिए संकट बन जाता है और यह संकट धीरे-धीरे पूरी दुनिया को अपनी चपेट में ले लेता है। आज मानवता चीख रही है, रो रही है, क्योंकि जिन हाथों ने मशीनें बनाई थीं, उन्हीं हाथों ने विनाश के हथियार भी गढ़ लिए हैं। वैज्ञानिक प्रगति का यह विडंबनापूर्ण रूप हमें यह सोचने पर मजबूर करता है कि क्या हम सच में विकसित हुए हैं या केवल विनाश के नए-नए तरीके खोज लिए हैं। युद्ध के मैदान में गिरता हर सैनिक केवल एक शरीर नहीं होता, वह किसी का बेटा, किसी का पिता, किसी का सपना होता है, और जब वह गिरता है, तो उसके साथ कई जीवन बिखर जाते हैं। बच्चों की मासूमियत, माताओं की ममता और बुजुर्गों की आशाएँ इस महायुद्ध की भेंट चढ़ जाती हैं। ऐसे में यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि क्या युद्ध का अंत शांति में नहीं हो सकता, क्या संवाद और वार्ता के माध्यम से समाधान नहीं निकाला जा सकता। इतिहास इस बात का साक्षी रहा है कि जहाँ युद्ध ने केवल विनाश दिया, वहीं शांति वार्ताओं ने नए युग की शुरुआत की है। मार्टिन लूथर किंग जूनियर ने भी यही कहा कि अंधकार अंधकार को नहीं मिटा सकता, केवल प्रकाश ही ऐसा कर सकता है,और यह प्रकाश केवल शांति और संवाद के माध्यम से ही संभव है।' जब राष्ट्र अपने अहंकार और शक्ति प्रदर्शन को त्यागकर एक-दूसरे के साथ बैठते हैं, तो समस्याओं का समाधान निकलता है, क्योंकि संवाद वह सेतु है जो दुश्मनी को भी दोस्ती में बदल सकता है। आज की दुनिया को यह समझने की आवश्यकता है कि युद्ध कोई समाधान नहीं, बल्कि समस्याओं को और जटिल बनाने का माध्यम है। विज्ञान का उपयोग यदि मानव कल्याण के लिए किया जाए, तो यह जीवन को सरल और सुंदर बना सकता है, लेकिन यदि इसका दुरुपयोग किया गया, तो यह पूरी सृष्टि को विनाश के कगार पर पहुँचा सकता है। अल्बर्ट आइंस्टीन जैसे महान वैज्ञानिक, जिन्होंने परमाणु युग की शुरुआत देखी, उन्होंने चेतावनी दी मुझे नहीं पता तीसरा विश्व युद्ध किन हथियारों से लड़ा जाएगा, लेकिन चौथा विश्व युद्ध पत्थरों और लाठियों से लड़ा जाएगा। उनका यह कहना।विज्ञान के दुरुपयोग की भयावह परिणति को दर्शाता है। उन्होंने यह भी कहा कि 'शांति बलपूर्वक नहीं रखी जा सकती, यह केवल समझ से प्राप्त होती है।' हमें यह तय करना होगा कि हम अपने ज्ञान का उपयोग किस दिशा में करना चाहते हैं,सृजन की ओर या विनाश की ओर। महायुद्ध की यह भयावह छाया हमें चेतावनी देती है कि यदि हमने समय रहते अपने मार्ग को नहीं बदला, तो वह दिन दूर नहीं जब मानवता केवल इतिहास की पुस्तकों में ही रह जाएगी। इसलिए आवश्यक है कि विश्व के सभी राष्ट्र अपने मतभेदों को भुलाकर शांति, सहयोग और सह-अस्तित्व के मार्ग को अपनाएँ। युद्ध के स्थान पर यदि हम संवाद को प्राथमिकता दें, तो न केवल संघर्ष टल सकते हैं, बल्कि एक बेहतर और सुरक्षित दुनिया का निर्माण भी संभव है। अंततः यह मानवता की परीक्षा का समय है, जहाँ हमें यह साबित करना होगा कि हम केवल तकनीकी रूप से ही नहीं, बल्कि नैतिक और मानवीय दृष्टि से भी विकसित हैं, और यही विकास हमें महायुद्ध की विभीषिका से बचाकर शांति के मार्ग पर आगे बढ़ा सकता है।

संजीव ठाकुर

जंग रुकी, शक नहीं: पाकिस्तान की भूमिका पर क्यों उठ रहे हैं सवाल?

[ट्रंप के यू-टर्न के पीछे की असली कहानी: तेल, दबाव और डर]

[ट्रंप, पाकिस्तान और ईरान: दो हफ्ते का विराम, लेकिन खतरा बरकरार]

मध्य पूर्व की धधकती धरती पर जब चारों ओर बारूद, धमकियों और विनाश की गूंज फैल रही थी, तभी अचानक शांति की ऐसी खबर सामने आई जिसने पूरी दुनिया को स्तब्ध कर दिया। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप, जो कुछ घंटे पहले तक ईरान को 'सभ्यता के अंत' की चेतावनी दे रहे थे, अचानक दो सप्ताह के युद्ध विराम के लिए तैयार हो गए। उनकी केवल एक शर्त थी—ईरान तुरंत और सुरक्षित ढंग से होर्मुज स्ट्रेट खोल दे। यही वह समुद्री मार्ग है, जिससे दुनिया के बड़े हिस्से तक तेल पहुंचता है। अब सबसे बड़ा सवाल यह है कि क्या यह फैसला पाकिस्तान की चौंकाने वाली कूटनीति की जीत था, या फिर अमेरिका अपनी ही भड़काई आग में फंसकर पीछे हटने पर मजबूर हो गया?

ट्रंप की इस घोषणा ने वैश्विक राजनीति की पूरी बिसात ही पलट दी। दुनिया युद्ध के छठे सप्ताह में पहुंच चुकी थी। तेल की कीमतें लगातार आसमान छू रही थीं, शेयर बाजार दहशत में डूबे थे और पश्चिमी अर्थव्यवस्थाओं पर संकट की रेखाएं साफ नजर आने लगी थीं। ऐसे निर्णायक मोड़ पर ट्रंप ने सोशल मीडिया पर खुलासा किया कि पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ और सेना प्रमुख फील्ड मार्शल आसिम मुनीर से बातचीत के बाद उन्होंने ईरान पर संभावित सैन्य कार्रवाई को दो सप्ताह के लिए टालने का फैसला किया है। इसके तुरंत बाद ईरान की सुप्रीम नेशनल सिक्योरिटी काउंसिल ने भी इस प्रस्ताव को मंजूरी दे दी। 10 अप्रैल को इस्लामाबाद में बातचीत तय हुई और पूरे क्षेत्र में पहली बार ऐसा लगा कि बारूद के बीच भी शांति की राह निकल सकती है।

इस संकट में पाकिस्तान ने खुद को केवल पड़ोसी देश नहीं, बल्कि मुख्य मध्यस्थ के रूप में पेश करने की कोशिश की। शहबाज शरीफ ने ट्रंप से युद्ध टालने की अपील की, जबकि ईरान से होर्मुज स्ट्रेट खोलने को कहा। रातभर आसिम मुनीर अमेरिकी उपराष्ट्रपति जेडी वांस और विशेष दूतों के संपर्क में रहे। दावा है कि ईरान की दस सूत्रीय योजना भी पाकिस्तान के जरिए वॉशिंगटन पहुंची। इस्लामाबाद ने ईरान से पुराने रिश्तों और अमेरिका से सैन्य साझेदारी के बीच संतुलन साधा, लेकिन इसी ने उसकी नीयत पर सवाल खड़े कर दिए। मिस्र और तुर्की को साथ जोड़कर पाकिस्तान ने संकेत दिया कि वह केवल क्षेत्रीय खिलाड़ी नहीं, बल्कि संकट में खुद को अनिवार्य शक्ति साबित करना चाहता है।

पाकिस्तान की यह भूमिका जितनी प्रभावशाली दिखती है, उतनी ही संदेहों से घिरी भी है। कई विश्लेषकों का मानना है कि इस्लामाबाद ने शांति से अधिक अपनी घटती वैश्विक हैसियत बचाने का मौका देखा। एक तरफ वह अमेरिका का करीबी सुरक्षा साझेदार है, दूसरी तरफ ईरान से उसके धार्मिक, भौगोलिक और राजनीतिक संबंध हैं। ऐसे में दोनों पक्षों को साथ रखने की उसकी कोशिश क्या वास्तव में संतुलन है, या केवल अपना प्रभाव बढ़ाने की चाल? फिलहाल यह रणनीति उसके पक्ष में दिख रही है, लेकिन यही दांव आगे सबसे बड़ा संकट बन सकता है। वार्ता विफल हुई या किसी एक पक्ष ने उसे पक्षपाती माना, तो पाकिस्तान दोनों ओर से अविश्वास और अलगाव का सामना कर सकता है।

ट्रंप के कदम पीछे खींचने की असली वजह पाकिस्तान नहीं, अमेरिका की बढ़ती मजबूरी थी। होर्मुज स्ट्रेट बंद होते ही तेल आपूर्ति पर असर पड़ा और

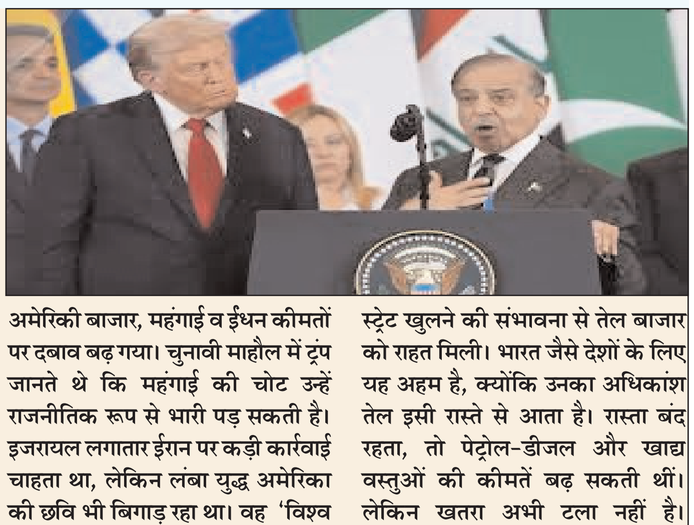

अमेरिकी बाजार, महंगाई व ईंधन कीमतों पर दबाव बढ़ गया। चुनावी माहौल में ट्रंप जानते थे कि महंगाई की चोट उन्हें राजनीतिक रूप से भारी पड़ सकती है। इजरायल लगातार ईरान पर कड़ी कार्रवाई चाहता था, लेकिन लंबा युद्ध अमेरिका की छवि भी बिगाड़ रहा था। वह 'विश्व पुलिस' नहीं, बल्कि 'युद्ध को हवा देने वाली शक्ति' नजर आने लगा था। ऐसे में ट्रंप के सामने विकल्प साफ था—या तो युद्ध बढ़ाकर संकट गहराएं, या पीछे हटकर नुकसान सीमित करें। उन्होंने दूसरा रास्ता चुना।

ईरान ने युद्धविराम को दबाव में लिया गया फैसला नहीं, बल्कि शर्तों से जुड़ा समझौता माना। तेहरान ने साफ कर दिया कि उसे कुछ दिनों की राहत नहीं, स्थायी समाधान चाहिए। उसकी मांगों में प्रतिबंधों में ढील, पुनर्निर्माण सहायता और भविष्य में हमले न करने की गारंटी शामिल है। ईरान ने होर्मुज स्ट्रेट खोलने के संकेत दिए, लेकिन बदले में अमेरिका से स्पष्ट राजनीतिक भरोसा मांगा। इसी वजह से वह शुरुआत में दो सप्ताह के अस्थायी विराम पर तैयार नहीं हुआ। पाकिस्तान बीच में अपनी भूमिका दिखाता रहा, लेकिन निर्णायक दबाव चीन ने बनाया। इससे साफ है कि यह केवल दो देशों का टकराव नहीं, बल्कि बदलते वैश्विक शक्ति संतुलन की लड़ाई है। इस युद्धविराम का सबसे गहरा असर वैश्विक अर्थव्यवस्था पर पड़ा। होर्मुज स्टेट खुलने की संभावना से तेल बाजार को राहत मिली। भारत जैसे देशों के लिए यह अहम है, क्योंकि उनका अधिकांश तेल इसी रास्ते से आता है। रास्ता बंद रहता, तो पेट्रोल-डीजल और खाद्य वस्तुओं की कीमतें बढ़ सकती थीं। लेकिन खतरा अभी टला नहीं है। इजरायल सतर्क है, लेबनान और हिजबुल्लाह के बीच तनाव जारी है। ऐसे में क्या इस्लामाबाद की वार्ता सचमुच समाधान दे पाएगी, या केवल संकट को कुछ समय के लिए टाल रही है? अगर दो सप्ताह बाद बातचीत विफल हुई, तो यह टकराव और खतरनाक हो सकता है। यह युद्धविराम शांति नहीं, केवल अस्थायी विराम लगता है।

धुआं अभी थमा है, लेकिन सबसे बड़ा सवाल बाकी है—इस विराम के पीछे असली जीत किसकी है? पाकिस्तान खुद को संकट का समाधानकर्ता बता रहा है, पर क्या उसने सचमुच हालात बदले, या केवल अमेरिका की मजबूरी को अपनी उपलब्धि बना लिया? अमेरिका पहले ही महंगाई, चुनावी दबाव और वैश्विक आलोचना से घिरा था। दूसरी ओर ईरान ने दिखा दिया कि होर्मुज स्ट्रेट बंद कर वह पूरी दुनिया पर दबाव बना सकता है। अब फैसला 10 अप्रैल की वार्ता करेगी। वहीं साफ होगा कि यह शांति की शुरुआत है, या अगली टकराव से पहले का सन्नाटा।

प्रो. आरके जैन 'अरिजीत'

शिक्षा का 'बाजार' या 'संस्कार'—दोषी कौन? व्यवस्था, समाज या मानसिकता?

उत्तर प्रदेश की शिक्षा व्यवस्था आज एक ऐसे दोराहे पर खड़ी है, जहाँ हर पक्ष के पास अपने तर्क हैं और हर दिल में एक शिकायत। गोंडा से शुरू हुआ निजी स्कूलों के विरुद्ध आक्रोश आज पूरे प्रदेश की एक सामूहिक आवाज बन चुका है। लेकिन इस बहस के शोर में क्या हम उस बुनियादी सच को देख पा रहे हैं जो हमारी आँखों के सामने है? यह संपादकीय किसी का पक्ष लेने के लिए नहीं, बल्कि समाज और सरकार के सामने उस आईने को रखने के लिए है जिसमें हम सभी का चेहरा साफ दिखाई दे।

निजी स्कूलों की 'मजबूरी' बनाम 'मनमानी'

हमें धरातल की सच्चाई स्वीकार करनी होगी कि निजी स्कूल बिना किसी 'सरकारी ग्रांट' के चलते हैं। एक संस्थान को चलाने के लिए बिजली के भारी व्यावसायिक बिल, सुरक्षा मानक, आधुनिक लैब और सैकड़ों कर्मचारियों का वेतन—यह सब एक विशाल आर्थिक बोझ है। यदि स्कूल प्रबंधन आर्थिक संतुलन नहीं बनाएगा, तो गुणवत्ता का गिरना तय है।

किन्तु, प्रश्न तब उठता है जब यह 'प्रबंधन' एक 'सिंडिकेट' का रूप ले लेता है। किताबों के नाम पर कमीशनखोरी, हर साल यूनिफॉर्म का बदल जाना और अभिभावकों को विशेष दुकानों का बंधक बनाना—यह 'मजबूरी' नहीं, बल्कि 'नैतिक पतन' है। निजी संस्थानों को समझना होगा कि वे समाज का निर्माण कर रहे हैं, किसी वस्तु का उत्पादन नहीं। मुनाफे की भूख जब शिक्षा की शुचिता को निगलने लगे, तो समाज का आक्रोश स्वाभाविक है।

समाज का विरोधाभास: विरोध की हुंकार, पर निजी का ही प्यार?

संपादकीय का सबसे तीखा सवाल उन अभिभावकों से है जो निजी स्कूलों की फीस पर तो सवाल उठाते हैं, लेकिन अपने ही क्षेत्र के सरकारी प्राथमिक, जूनियर और एडेड विद्यालयों की ओर कदम बढ़ाना अपनी शान के खिलाफ समझते हैं। सरकार ने करोड़ों खर्च कर 'ऑपरेशन कायाकल्प' के जरिए स्कूलों को संवारा है। वहां ञ्जश्वञ्ज/ष्टञ्जश्वञ्ज उत्तीर्ण उच्च शिक्षित शिक्षक तैनात हैं, जो योग्यता में किसी भी निजी स्कूल के शिक्षक से कहीं आगे हैं।

फिर भी, एक चपरासी से लेकर बड़े अधिकारी तक का बच्चा निजी कॉन्वेंट की कतार में खड़ा है। जब तक समाज सरकारी व्यवस्था पर विश्वास नहीं जताएगा और वहां अपने बच्चों को नहीं भेजेगा, तब तक निजी स्कूलों का एकाधिकार (स्रूष्ठश्वश्चश्वद्य4) खत्म नहीं होगा। हम विरोध तो करते हैं, लेकिन विकल्प के तौर पर अपनी ही सरकारी व्यवस्था को अपनाने का साहस नहीं जुटा पाते।

सरकार की जवाबदेही: नीति बनाम नीयत

सरकार के पास नियम तो कड़े हैं, पर उनका 'धरातल' पर उतरना अभी बाकी है। समय आ गया है कि उत्तर प्रदेश में एक ऐसा साहसी कानून बने कि 'समस्त सरकारी सेवकों, जनप्रतिनिधियों और शिक्षकों के बच्चे अनिवार्य रूप से सरकारी स्कूलों में ही पढ़ेंगे।'

सोचिए, जिस दिन जिलाधिकारी, बीएसए और पुलिस कप्तान का बच्चा टाट-पट्टी पर बैठकर सरकारी स्कूल में पढ़ेगा, उस दिन वहां की शिक्षा, पंखे,

मिड-डे मील और ब्लैकबोर्ड की गुणवत्ता रातों-रात बदल जाएगी। जब व्यवस्था चलाने वालों का निजी हित व्यवस्था से जुड़ेगा, तभी वास्तविक क्रांति आएगी। बिना जवाबदेही के सरकारी स्कूल केवल 'गरीबों का ठिकाना' बनकर रह जाएंगे।

आईना हमारे सामने है

आज शिक्षा का स्तर बच्चे के 'पिता की जेब' तय कर रही है, जो एक स्वस्थ लोकतंत्र के लिए शुभ संकेत नहीं है। यदि हमें उत्तर प्रदेश के भविष्य को संवारना है, तो तीन स्तरों पर काम करना होगा: स्कूलों को: लाभ की सीमा तय करनी होगी और अनैतिक कमीशनखोरी बंद करनी होगी। समाज को: सरकारी स्कूलों पर भरोसा करना होगा और वहां के प्रबंधन से सवाल पूछने की हिम्मत जुटानी होगी। सरकार को: केवल निर्देश नहीं, बल्कि 'समान शिक्षा संहिता' लागू करनी होगी जहाँ अमीर और गरीब का बच्चा एक ही छत के नीचे पढ़े। शिक्षा कोई व्यापार नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों का भविष्य है। यदि आज हमने इस आईने में अपनी कमियों को नहीं देखा, तो आने वाला कल हमें कभी माफ नहीं करेगा।

बृजभूषण तिवारी

पुस्तके ज्ञानियों की समाधि

जीवन विकास में पुस्तकों का महत्व ज्ञान का अमर स्रोत और मार्गदर्शक प्रकाश

मानव जीवन के विकास में ज्ञान का स्थान सर्वोपरि है और इस ज्ञान की प्राप्ति का सबसे सशक्त माध्यम पुस्तकें हैं। स्वाध्याय और पुस्तकें एक-दूसरे के पूरक हैं। जिस प्रकार अन्न और जल जीवन के लिए आवश्यक हैं, उसी प्रकार पुस्तकें बौद्धिक और आत्मिक विकास के लिए अनिवार्य हैं। पुस्तकें केवल कागज और अक्षरों का संग्रह नहीं होतीं, बल्कि उनमें महान विचारकों, संतों और महापुरुषों के अनुभव, चिंतन और जीवन का सार समाहित होता है। वे मनुष्य को दिशा देती हैं, उसे अज्ञान के अंधकार से निकालकर ज्ञान के प्रकाश की ओर ले जाती हैं।

पुस्तकों की विशेषता यह है कि वे निर्जीव होते हुए भी जीवंत प्रतीत होती हैं। उनमें लेखक की आत्मा बसती है। जब कोई व्यक्ति पुस्तक खोलता है तो उसे ऐसा अनुभव होता है मानो महान व्यक्तित्व उसके सामने उपस्थित होकर उससे संवाद कर रहे हों। इस प्रकार पुस्तकें केवल ज्ञान का संग्रह नहीं बल्कि जीवंत संवाद का माध्यम बन जाती हैं। यही कारण है कि उन्हें ज्ञानियों की समाधि कहा गया है, जहां उनके विचार सुरक्षित रहते हैं और पीढ़ी दर पीढ़ी मानवता का मार्गदर्शन करते हैं।

पुस्तकों का प्रभाव दो प्रकार का होता है। वे अमृत भी बन सकती हैं और विष भी। अच्छी पुस्तकें मनुष्य को सद्मार्ग पर चलने की प्रेरणा देती हैं, उसके विचारों को शुद्ध करती हैं और उसके चरित्र का निर्माण करती हैं। वे सच्चे मित्र की भांति उसका मार्गदर्शन करती हैं और जीवन की कठिनाइयों में उसे सही दिशा दिखाती हैं। इसके विपरीत, निम्न स्तर की या गलत विचारों वाली पुस्तकें मनुष्य को भ्रमित कर सकती हैं और उसे गलत रास्ते पर ले जा सकती हैं। इसलिए यह आवश्यक है कि व्यक्ति विवेकपूर्वक पुस्तकों का चयन करे और सद्ग्रंथों का अध्ययन करे। पुस्तकों का महत्व इस बात से भी स्पष्ट होता है कि वे अमर होती हैं। मनुष्य का शरीर नश्वर है, लेकिन उसके विचार और कृतियां पुस्तकों के माध्यम से सदैव जीवित रहती हैं। प्राचीन ग्रंथ जैसे गीता, रामायण, महाभारत और अन्य धार्मिक व नैतिक साहित्य आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने अपने समय में थे। इन ग्रंथों ने न केवल अपने युग को प्रभावित किया बल्कि आने वाली पीढ़ियों को भी दिशा प्रदान की है। यही कारण है कि पुस्तकें लेखक के अमरत्व का प्रतीक मानी जाती हैं। इतिहास में पुस्तकों के निर्माण और संरक्षण के लिए अनेक प्रयास किए गए हैं। प्राचीन काल में ज्ञान को सुनकर याद रखने की परंपरा थी, जिसे श्रुति कहा जाता था। बाद में जब यह अनुभव हुआ कि स्मृति पर निर्भर रहना पर्याप्त नहीं है, तब ज्ञान को लिखित रूप देने की आवश्यकता महसूस हुई। प्रारंभ में ताड़पत्र, भोजपत्र और चमड़े पर लेखन किया जाता था। यह प्रक्रिया अत्यंत कठिन और श्रमसाध्य थी। एक पुस्तक तैयार करने में वर्षों लग जाते थे और उसकी प्रतियां बनाना भी अत्यंत कठिन कार्य था। इसके बावजूद ज्ञान के संरक्षण के लिए विद्वानों और राजाओं ने अथक प्रयास किए। समय के साथ कागज का आविष्कार हुआ और मुद्रण कला के विकास ने पुस्तकों के प्रसार को सरल बना दिया। आज के युग में एक ही पुस्तक की हजारों प्रतियां सहजता से तैयार हो जाती हैं और ज्ञान का प्रसार व्यापक स्तर पर संभव हो गया है। यह परिवर्तन मानव सभ्यता के विकास में एक महत्वपूर्ण चरण रहा है। इसके कारण शिक्षा का प्रसार हुआ और समाज में जागरूकता बढ़ी।

पुस्तकों के महत्व को समझते हुए अनेक महान व्यक्तियों ने उनके प्रति गहरा सम्मान व्यक्त किया है। उन्होंने पुस्तकों को जीवन का सच्चा साथी माना है। पुस्तकें न केवल ज्ञान देती हैं बल्कि जीवन जीने की कला भी सिखाती हैं। वे मनुष्य के विचारों को परिष्कृत करती हैं और उसे नैतिक मूल्यों से जोड़ती हैं। इस प्रकार वे व्यक्ति के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

ज्ञान की आराधना में भी पुस्तकों का विशेष स्थान है। स्वाध्याय, ज्ञानियों का सम्मान, और ज्ञान के प्रसार के साधनों का समर्थन, ये सभी कार्य पुस्तकों के माध्यम से ही संभव होते हैं। पुस्तकालय इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं क्योंकि वे ज्ञान का भंडार होते हैं और समाज के प्रत्येक व्यक्ति को अध्ययन का अवसर प्रदान करते हैं। इसलिए पुस्तकों के साथ-साथ पुस्तकालयों का विकास भी आवश्यक है। अंततः यह कहा जा सकता है कि पुस्तकें मानव जीवन की अमूल्य धरोहर हैं। वे केवल ज्ञान का स्रोत नहीं बल्कि जीवन को दिशा देने वाली शक्ति हैं। वे मनुष्य को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाती हैं और उसे एक बेहतर इंसान बनने की प्रेरणा देती हैं। आवश्यकता केवल इस बात की है कि हम पुस्तकों के महत्व को समझें, अच्छी पुस्तकों का चयन करें और नियमित रूप से उनका अध्ययन करें। तभी हम अपने जीवन को समृद्ध और सफल बना सकते हैं।

कांतिलाल मांडोत

वैश्विक ऊर्जा संकट और भारत की चुनौतियाँ

वर्तमान समय में संपूर्ण विश्व जिस सबसे भयावह और जटिल संकट के मुहाने पर खड़ा है, वह ऊर्जा संकट है। ऊर्जा केवल उद्योगों को चलाने का साधन नहीं है, बल्कि यह आधुनिक सभ्यता की वह धड़कन है जिसके बिना जीवन की गति थम सकती है। आज हम जिस युग में जी रहे हैं, वहाँ सुई से लेकर हवाई जहाज तक और खेत की जुताई से लेकर अंतरिक्ष के अनुसंधानों तक, सब कुछ ऊर्जा पर आश्रित है। ऐसे में ऊर्जा की आपूर्ति में आने वाली कोई भी बाधा सीधे तौर पर मानव अस्तित्व और वैश्विक शांति के लिए चुनौती बन जाती है। यह संकट अचानक उत्पन्न हुई कोई घटना नहीं है, अपितु इसके पीछे दशकों से चली आ रही दोषपूर्ण नीतियां, भू-राजनीतिक वर्चस्व की जंग और संसाधनों का अनियंत्रित दोहन उत्तरदायी है। विशेष रूप से पश्चिम एशिया के क्षेत्रों में निरंतर बढ़ता तनाव और विश्व के प्रमुख समुद्री मार्गों पर मंडराते युद्ध के बादल इस संकट की आग में घी डालने का कार्य कर रहे हैं। जब हम होर्मुज जलडमरूमध्य जैसे संवेदनशील क्षेत्रों की बात करते हैं, तो हमें यह समझना होगा कि यह केवल भूगोल का एक हिस्सा नहीं है, बल्कि यह विश्व की आर्थिक जीवन-रेखा है। यहाँ से गुजरने वाले तेल के जहाज दुनिया की प्यास बुझाते हैं, और यदि इस मार्ग में तनिक भी अवरोध उत्पन्न होता है, तो उसकी थरथराहट न्यूयॉर्क से लेकर दिल्ली और टोक्यो तक महसूस की जाती है। युद्ध की विभीषिका केवल सीमाओं तक सीमित नहीं रहती, बल्कि वह उन जहाजों को भी अपनी चपेट में ले लेती है जो राष्ट्रों की प्रगति का ईंधन ढो रहे होते हैं।

जब आपूर्ति की शृंखला टूटती है, तो सबसे पहला प्रहार अर्थव्यवस्था पर होता है। ऊर्जा संसाधनों की कमी के कारण तेल और गैस की कीमतों में जो उछाल आता है, वह संपूर्ण वैश्विक बाजार को अस्थिर कर देता है। कीमतें बढ़ना केवल एक संख्यात्मक परिवर्तन नहीं है, बल्कि यह उस आम नागरिक की थाली पर होने वाला हमला है जो महंगाई के बोझ तले दब जाता है। परिवहन की लागत बढ़ने से अनिवार्य वस्तुओं के दाम आसमान छूने लगते हैं, जिससे निर्धन और मध्यम वर्ग का जीवन दूभर हो जाता है। ऊर्जा संकट का यह आर्थिक पक्ष अत्यंत व्यापक है क्योंकि तेल और प्राकृतिक गैस केवल ईंधन नहीं हैं, बल्कि वे अनेक उद्योगों के लिए कच्चे माल का स्रोत भी हैं। उर्वरक उद्योग पूरी तरह से गैस पर निर्भर है, और यदि गैस महंगी होती है, तो खेती की लागत बढ़ती है, जिससे अंततः खाद्य सुरक्षा पर संकट मंडराने लगता है। इसी प्रकार दवाइयाँ, वस्त्र और प्लास्टिक जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्र भी इसी ऊर्जा चक्र का हिस्सा हैं। इसलिए ऊर्जा संकट एक संक्रामक रोग की तरह है जो एक क्षेत्र से शुरू होकर पूरी अर्थव्यवस्था के अंगों को शिथिल कर देता है। पिछले कुछ वर्षों में हमने देखा है कि किस प्रकार अंतरराष्ट्रीय स्तर पर होने वाली राजनीतिक उठा-पटक ने विकसित और विकासशील दोनों तरह के राष्ट्रों की आर्थिक नींव हिला दी है।

इस वैश्विक परिदृश्य में भारत की स्थिति अत्यंत संवेदनशील और चुनौतीपूर्ण है। भारत विश्व की सबसे तेजी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में से एक है और इस तीव्र विकास को बनाए रखने के लिए ऊर्जा की निरंतर और सस्ती आपूर्ति अनिवार्य है। भारत अपनी कच्चा तेल संबंधी आवश्यकताओं का लगभग पचासी प्रतिशत हिस्सा विदेशों से आयात करता है। यह भारी निर्भरता भारत को वैश्विक उतार-चढ़ाव के प्रति अत्यंत असुरक्षित बना देती है। जब भी अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतें बढ़ती हैं, भारत का विदेशी मुद्रा भंडार तेजी से घटने लगता है और व्यापार घाटा बढ़ जाता है। इससे न केवल देश की मुद्रा का मूल्य प्रभावित होता है, बल्कि सरकार की विकास योजनाओं के लिए आवंटित धन का एक बड़ा हिस्सा केवल ऊर्जा बिल चुकाने में चला जाता है। भारत के लिए चुनौती केवल आर्थिक नहीं है, बल्कि सामरिक भी है। हमें अपनी ऊर्जा सुरक्षा के लिए उन क्षेत्रों पर निर्भर रहना पड़ता है जो राजनीतिक रूप से अत्यंत अस्थिर हैं। ऐसे में यदि समुद्री मार्गों पर सैन्य टकराव की स्थिति बनती है, तो भारत के सामने अपनी विशाल जनसंख्या की ऊर्जा जरूरतों को पूरा करने का गंभीर संकट खड़ा हो जाता है।

इसके अतिरिक्त, ऊर्जा संकट का एक सामाजिक और राजनीतिक आयाम भी है। भारत जैसे लोकतांत्रिक देश में जहाँ एक बड़ी आबादी अभी भी गरीबी रेखा के आसपास जीवन यापन कर रही है, ईंधन और बिजली की कीमतों में वृद्धि सीधे तौर पर जन-असंतोष को जन्म देती है। जब रसोई गैस महंगी होती है या सार्वजनिक परिवहन का किराया बढ़ता है, तो इसका प्रभाव देश की सामाजिक स्थिरता पर पड़ता है। सरकार के सामने एक बड़ी चुनौती यह होती है कि वह वैश्विक बाजार की ऊंची कीमतों और घरेलू जनता के हितों के बीच संतुलन कैसे बनाए। यह संतुलन साधना किसी अग्निपरीक्षा से कम नहीं है क्योंकि एक ओर राजकोषीय अनुशासन बनाए रखने का दबाव होता है और दूसरी ओर जनता को महंगाई से राहत देने की जिम्मेदारी। यह स्थिति नीति निर्माताओं को इस दिशा में सोचने पर विवश करती है कि क्या हम लंबे समय तक केवल पारंपरिक जीवाश्म ईंधनों पर निर्भर रह सकते हैं?

इसी संकट के गर्भ से समाधान की किरणें भी प्रस्फुटित होती हैं। वर्तमान वैश्विक परिस्थितियों ने भारत और विश्व के अन्य देशों को यह स्पष्ट संकेत दे दिया है कि भविष्य केवल नवीकरणीय और वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों में ही सुरक्षित है। अब समय आ गया है कि हम अपनी निर्भरता कोयले और तेल से हटाकर सौर शक्ति, पवन शक्ति और जल शक्ति की ओर ले जाएं। भारत ने इस दिशा में सराहनीय प्रयास किए हैं और अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन जैसी पहलों के माध्यम से विश्व का नेतृत्व करने की इच्छाशक्ति प्रदर्शित की है। हरित हाइड्रोजन जैसी नई प्रौद्योगिकियाँ भविष्य की ऊर्जा जरूरतों को पूरा करने में क्रांतिकारी भूमिका निभा सकती हैं। हालांकि, इन विकल्पों की ओर संक्रमण इतना सरल नहीं है। इसके लिए भारी निवेश, अत्याधुनिक अनुसंधान और विशाल बुनियादी ढांचे की आवश्यकता होती है। इसके साथ ही, भारत को अपनी परमाणु ऊर्जा क्षमताओं का भी विस्तार करना होगा ताकि आधारभूत भार के लिए एक स्थिर और स्वच्छ ऊर्जा स्रोत उपलब्ध रहे।

ऊर्जा संकट केवल संसाधनों की कमी का नाम नहीं है, बल्कि यह मानवीय व्यवहार और उपभोग की प्रवृत्तियों पर भी एक प्रश्नचिह्न है। हमने जिस प्रकार प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन किया है, उसका परिणाम आज हमारे सामने है। यह संकट हमें याद दिलाता है कि ऊर्जा का संरक्षण ही ऊर्जा का सृजन है। हमें अपनी जीवनशैली में संयम और मितव्ययिता को अपनाना होगा। सामूहिक परिवहन के साधनों का अधिक उपयोग, बिजली की बचत और ऊर्जा-दक्ष उपकरणों को बढ़ावा देना अब केवल व्यक्तिगत पसंद नहीं, बल्कि एक राष्ट्रीय कर्तव्य बन चुका है। सतत विकास और संपोषणीय प्रगति का मार्ग तभी प्रशस्त हो सकता है जब हम प्रकृति के साथ सामंजस्य बिठाकर ऊर्जा का उपयोग करें। भविष्य में वही राष्ट्र सफल और सुरक्षित रहेंगे जो ऊर्जा के मामले में आत्मनिर्भर होंगे और जिनके पास विविध स्रोतों का एक सुदृढ़ ढांचा होगा। अंततः, वैश्विक ऊर्जा संकट एक ऐसी ऐतिहासिक चुनौती है जिसने पूरी मानवता को एक चौराहे पर खड़ा कर दिया है। यह समय दोषारोपण का नहीं, बल्कि सामूहिक क्रियाशीलता का है। अंतरराष्ट्रीय सहयोग और आपसी समन्वय के बिना इस संकट का स्थायी समाधान संभव नहीं है। भारत जैसे देश के लिए यह एक अवसर भी है कि वह अपनी ऊर्जा नीतियों को पुनर्गठित करे और भविष्य की आवश्यकताओं के अनुरूप एक आत्मनिर्भर और स्वच्छ ऊर्जा तंत्र का निर्माण करे। यदि हम अपनी पारंपरिक बुद्धिमत्ता और आधुनिक विज्ञान का सही तालमेल बिठा सके, तो हम न केवल इस संकट से उबर सकेंगे, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए एक अधिक सुरक्षित, समृद्ध और प्रकाशवान भविष्य भी सुनिश्चित कर पाएंगे। ऊर्जा की यह जंग केवल बाजारों में नहीं, बल्कि प्रयोगशालाओं, खेतों और हर घर के आंगन में लड़ी जानी है। यह एक संकल्प है जो हमें एक सुरक्षित कल की ओर ले जाएगा।

महेन्द्र तिवारी

स्वामी- स्वतंत्र प्रभात मीडिया, मुद्रक एवं प्रकाशक प्रीती शुक्ल द्वारा सुशीला स्टेडी बेल एकेडमी 117-मोहल्ला बिजय लक्ष्मी नगर परगना सौराचाद तहसील व जनपद सीतापुर से प्रकाशित तथा महावीर आफसेट 28, होनेट रोड लखनऊ से मुद्रित। सम्पादक रवि कुमार अवस्थी समाचार पत्र में तमे समस्त समाचार संवाददाताओं के अपने श्रोत एवं संकलन हैं, जिनसे सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। **नोट:** उपरोक्त सभी पद अवैतनिक एवं स्वयंसेवी हैं तथा समाचार पत्र से सम्बंधित सारे विवादों का न्याय क्षेत्र सीतापुर होगा। R.NI NO. UPHIN/2012/43078 मो0 नं0-9511151254, E-Mail: news@swatantraprabhat.com

संक्षिप्त खबरें

सड़क हादसे में 7 वर्षीय किशोर की मौके पर मौत

बिसवां (सीतापुर) कोतवाली क्षेत्र में बुधवार को एक दर्दनाक सड़क हादसे में 17 वर्षीय किशोर की मौके पर ही मौत हो गई। घटना से क्षेत्र में सनसनी फैल गई और परिजनों में कोहराम मच गया। प्राप्त जानकारी के अनुसार, शौर्य गुप्ता उर्फ दीपू पुत्र आशीष गुप्ता, निवासी मोहल्ला गोपाल नगर, अपने चचेरे भाइयों को मंशाराम स्थित एलपिस स्कूल छोड़कर वापस घर लौट रहा था। शौर्य एलपीएस स्कूल में इंटरमीडिएट का छात्र था। बताया जा रहा है कि जैसे ही वह बिसवां के बड़े चौराहे पर सब्जी मंडी के पास वाइन शॉप के निकट पहुंचा, तभी अचानक उसकी बाइक फिसल गई और वह अनियंत्रित होकर पास से गुजर रहे डंपर की चपेट में आ गया। हादसा इतना भीषण था कि बाइक डंपर के नीचे चली गई और शौर्य की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई। हादसे के बाद मौके पर अफरा-तफरी मच गई। स्थानीय लोगों की भारी भीड़ जमा हो गई। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। पुलिस ने डंपर को कब्जे में ले लिया है, जबकि चालक मौके से फरार हो गया। पुलिस उसकी तलाश में जुटी हुई है। इस हृदयविदारक घटना से परिजनों में कोहराम मचा हुआ है और पूरे इलाके में शोक की लहर दौड़ गई है। फिलहाल पुलिस मामले की जांच कर रही है।

मंडी से बाइक चोरी, सब्जी लेने गया युवक बाइक गायब

लालगंज (रायबरेली)। कस्बे के गांधी चौराहा स्थित नवीन कृषि मंडी परिसर में बुधवार को सब्जी खरीदने आए एक युवक की बाइक चोरों ने उड़ा दी। सेमरपहा गांव निवासी महेंद्र ने बताया कि वह सुबह करीब 8 बजे अपनी बाइक से मंडी में सब्जी खरीदने आया था। मंडी कार्यालय के पास उसने बाइक खड़ी कर दी और खरीदारी करने लगा। कुछ देर बाद वापस लौटने पर उसकी बाइक वहां से गायब मिली। पीड़ित ने आसपास काफी तलाश की, लेकिन बाइक का कोई सुराग नहीं लग सका। घटना के बाद मंडी परिसर में हड़कंप मच गया। प्रभारी निरीक्षक प्रमोद कुमार सिंह ने बताया कि मामले की जांच की जा रही है। मंडी में लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगाली जा रही है, ताकि चोरों का पता लगाया जा सके।

रोडवेज बस से टकराकर बाइक सवार युवक घायल, गंभीर हालत में जिला अस्पताल रेफर

लालगंज (रायबरेली)। कोतवाली क्षेत्र के रायबरेली रोड स्थित शेखवापुर गांव के पास बुधवार को एक दर्दनाक सड़क हादसा हो गया। तेज रफ्तार और अनियंत्रित बाइक सवार ने चलती रोडवेज बस में पीछे से जोरदार टक्कर मार दी। टक्कर इतनी भीषण थी कि बाइक सवार सड़क पर गिरकर गंभीर रूप से घायल हो गया। घटना के बाद मौके पर मौजूद राहगीरों ने तुरंत एंबुलेंस बुलाकर घायल को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचाया, जहां डॉक्टरों ने प्राथमिक उपचार किया। हालत नाजुक होने पर उसे जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया। घायल की पहचान गुरबक्शगंज थाना क्षेत्र के सुल्तानपुर खेड़ा गांव निवासी दीपक पासी (30), पुत्र श्यामलाल के रूप में हुई है। बताया जा रहा है कि वह बाइक से अपनी ससुराल जा रहे थे। तभी शेखवापुर गांव स्थित बैंक ऑफ बड़ौदा शाखा के पास उनकी बाइक अचानक अनियंत्रित होकर चलती बस से जा टकराई।

यूपी में जनगणना 2027 को लेकर क्या है नया अपडेट? सात मई से खुलेगा स्व-गणना पोर्टल

लखनऊ। प्रदेश में जनगणना 2027 के पहले चरण की सभी तैयारियों को अंतिम रूप दिया जा रहा है। जनगणना में करीब 5.5 लाख प्रगणक और पर्यवेक्षक मैदान में उतरेंगे। इन सभी का सत्यापित और अद्यतन डिजिटल डेटाबेस 10 अप्रैल तक तैयार करने के निर्देश दिए गए हैं। साथ ही, फील्ड में तैनाती से पहले सभी को अनिवार्य और गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण दिया जाएगा। यह प्रशिक्षण 16 अप्रैल से सात मई के बीच पूरा किया जाएगा। जनगणना से पहले सात मई से स्वगणना के लिए भी पोर्टल खुल जाएगा। जनगणना 2027 के पहले चरण की तैयारियों को लेकर बुधवार को मुख्य सचिव एसपी गोयल ने वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिये हुई समीक्षा बैठक में सभी मंडलायुक्तों और जिलाधिकारियों को निर्देश दिए कि मकान सूचीकरण और गणना कार्य को तय समय-सीमा में सटीक और त्रुटिरहित तरीके से पूरा किया जाए।

जीपैट 2026 में जेएसएस इंस्टीट्यूट का परचम, मो. जावेद ने 21 वां स्थान हासिल कर रचा इतिहास

● छात्रों की सफलता पर कॉलेज में जश्न,भांगड़े पर थिरके विद्यार्थी, रैली निकालकर किया उत्साहवर्धन

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

सीतापुर(ब्यूरो)। जनपद के लहरपुर रोड स्थित पारा सराय चौराहा पर जे. एस. सिंह इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मेसी के छात्रों ने जीपैट- 2026 परीक्षा में शानदार प्रदर्शन कर संस्थान का गौरव बढ़ाया है। संस्थान के छात्र मो. जावेद ने ऑल इंडिया रैंक 21 प्राप्त कर बड़ी उपलब्धि हासिल की, जिससे पूरे जिले में खुशी की लहर दौड़ गई। इस सफलता के साथ ही संस्थान के अन्य छात्रों–लवकुश, फैजियाब, रुपांशी, तौफीक, मोहम्मद शादाब ने भी परीक्षा उत्तीर्ण कर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया। सभी सफल छात्रों को संस्थान द्वारा सम्मानित किया गया और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की गई। छात्रों की इस उपलब्धि पर कॉलेज परिसर में जश्न का माहौल देखने को मिला। ढोल-नगाड़ों की थाप पर छात्र-छात्राएं भांगड़े पर झूमते नजर आए। पूरे परिसर में खुशी और उत्साह का माहौल रहा। छात्रों ने एक-दूसरे को मिठाई खिलाकर बधाई दी और सफल विद्यार्थियों के सम्मान में रैली भी निकाली, जिससे पूरे क्षेत्र में उत्सव जैसा माहौल बन गया। संस्थान की डायरेक्टर डॉ. भूमिका योगी, डॉ. सुजीत गुप्ता एवं चेयरमैन अरुण कुमार सिंह ने सभी सफल छात्रों को बधाई देते हुए कहा कि यह उपलब्धि कड़ी मेहनत, अनुशासन और सही मार्गदर्शन का परिणाम है। इस अवसर पर छात्रों ने अपने अनुभव साझा करते हुए बताया कि निरंतर परिश्रम और लक्ष्य के प्रति समर्पण ही सफलता की कुंजी है। संस्थान परिवार ने इसे अपनी बड़ी उपलब्धि बताते हुए भविष्य में और बेहतर परिणाम की उम्मीद जताई है।

चंद्र भानु गुप्त कृषि महाविद्यालय में विदाई समारोह संपन्न

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

सीतापुर। 8 अप्रैल चंद्रभानु गुप्त कृषि महाविद्यालय में अंतिम वर्ष के छात्र-छात्राओं के सम्मान में षष्ठम सेमेस्टर के विद्यार्थियों द्वारा एक भव्य विदाई समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. योगेंद्र कुमार सिंह द्वारा मां सरस्वती की प्रतिमा पर दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया।

महाविद्यालय के मीडिया प्रभारी डॉ. सत्येंद्र कुमार सिंहने अपने संबोधन में बताया कि इस संस्थान के छात्र देश के विभिन्न उच्च पदों पर कार्यरत हैं। उन्होंने विद्यार्थियों को प्रेरित करते हुए कहा कि निरंतर परिश्रम और लगन से वे भी उच्च स्थान प्राप्त कर सकते हैं। कार्यक्रम के दौरान मिस्टर फेयरवेल का खिताब अनुराग को तथा मिस फेयरवेल का खिताब शिखा सिंह को प्रदान किया गया। इस अवसर पर महाविद्यालय के वरिष्ठ छात्र निखिल प्रताप सिंह ने अपने चार वर्षों के अनुभव साझा करते हुए कहा कि इस महाविद्यालय में उच्च कोटि की शिक्षा एवं उत्कृष्ट वातावरण प्राप्त होता है, जो विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में सहायक है। मंच का संचालन ग्रेसी एवं कुंदन सिंह द्वारा किया गया।

कार्यक्रम में डॉ. सुधीर कुमार रघुवंशी, डॉ. धनेंद्र कुमार सिंह, डॉ. आशुतोष श्रीवास्तव, डॉ. के.डी. सिंह, डॉ सुधाकर सिंह,डॉ दीपक पांडे ,डॉ. प्रमोद कुमार मिश्रा, डॉ. सुरेंद्र सिंह, डॉ. गुरप्रीत सिंह भाटिया, डॉ. सिद्दीकी, डॉ उपमा त्रिपाठी, डॉ अखिलेश कुमार, इबाद खान, श्वेता मिश्रा, स्मिता मिश्रा कार्यक्रम प्रभारी प्रतिमा सिंह सहित तथा गणमान्य शिक्षक तथा कर्मचारी एवं छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

योगी सरकार ने IAS अधिकारियों के किए तबादले, लिस्ट में शामिल हैं ये 5 नाम

लखनऊ। प्रदेश सरकार ने बुधवार को पांच आईएएस अधिकारियों के तबादले कर दिए। प्रतीक्षारत चल रही गुंजन द्विवेदी स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण का मिशन निदेशक बनाया गया है। प्रतीक्षारत चल रहे रत्नेश सिंह को उत्तर प्रदेश प्रशासन एवं प्रबंधन अकादमी लखनऊ का अपर निदेशक बनाया गया है। उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग प्रयागराज में सचिव के पद पर तैनात अशोक कुमार को सिंचाई, जल संसाधन के साथ कारागार प्रशासन एवं सुधार विभाग का विशेष सचिव बनाया गया है। विशेष सचिव उच्च शिक्षा गिरिजेश कुमार त्यागी को उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग प्रयागराज का सचिव बनाया गया है। इसी प्रकार सिंचाई, जल संसाधन तथा कारागार प्रशासन एवं सुधार विभाग में विशेष सचिव के पद पर तैनात अनीता वर्मा सिंह को विशेष सचिव उच्च शिक्षा के साथ ही डा. राम मनोहर लोहिया विधि विश्वविद्यालय कुलसचिव बनाया गया है।

मोहनलालगंज में फार्मर रजिस्ट्री सत्यापन पर प्रशासन सख्त, एसडीएम का औचक निरीक्षण

● .....दयालपुर पंचायत भवन में पहुंचे अधिकारी; मौके पर सुनी किसानों की समस्याएं, तेजी लाने के दिए निर्देश।

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

मोहनलालगंज, लखनऊ। राजधानी के लखनऊ के मोहनलालगंज तहसील क्षेत्र अंतर्गत ग्राम पंचायत दयालपुर में बुधवार को किसान सम्मान निधि योजना के प्रभावी क्रियान्वयन को लेकर प्रशासन ने सख्ती दिखाई। फार्मर रजिस्ट्री सत्यापन कार्य का औचक निरीक्षण करने पहुंचे उपजिलाधिकारी (एसडीएम) पवन पटेल और खंड विकास अधिकारी (बीडीओ) आशुतोष श्रीवास्तव ने व्यवस्थाओं का गहन जायजा लिया। पंचायत भवन में चल रहे पंजीकरण और सत्यापन कार्य की जमीनी स्थिति परखते हुए अधिकारियों ने किसानों से सीधे संवाद किया। एसडीएम पवन पटेल ने किसानों से बातचीत कर प्रक्रिया में आ रही तकनीकी और व्यवहारिक समस्याओं की जानकारी ली और मौके पर ही उनके समाधान के निर्देश दिए।

निरीक्षण के दौरान एसडीएम ने पंचायत सचिव शशांक शुक्ला को कड़े निर्देश देते हुए कहा कि सत्यापन कार्य में किसी भी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। उन्होंने स्पष्ट किया कि सभी पात्र किसानों का डाटा शुद्धता के साथ समयबद्ध तरीके से पोर्टल पर अपडेट किया जाए, ताकि कोई भी किसान सरकारी योजनाओं के लाभ से वंचित न रह सके। वहीं बीडीओ आशुतोष श्रीवास्तव ने भी सक्रिय भूमिका निभाते हुए स्वयं कई किसानों के अभिलेखों की जांच की और उनका सत्यापन कार्य पूरा कराया। इस अभियान को सफल बनाने में स्थानीय टीम की महत्वपूर्ण भागीदारी रही।

पंचायत सहायक ओशिता साहू और समाजसेवी शैलेंद्र शुक्ला ने गांव में घर-घर संपर्क कर किसानों को पंचायत भवन तक पहुंचाने में अहम भूमिका निभाई। साथ ही किसानों को फार्मर रजिस्ट्री के लाभों के प्रति जागरूक करते हुए आवश्यक दस्तावेज पूरे कराने में सहयोग किया। अधिकारियों के इस औचक निरीक्षण और सक्रियता से ग्रामीणों में संतोष देखने को मिला और बड़ी संख्या में किसानों ने अपना पंजीकरण एवं सत्यापन कार्य पूर्ण कराया।

शिक्षक खुद को जलाकर फैलाता है ज्ञान का प्रकाश: बीएसए

● शिक्षक कभी नहीं होता सेवानिवृत्त सदैव फैलाता रहता है ज्ञान: सत्येंद्र सिंह

शिक्षक अपने ज्ञान की रोशनी से तैयार करता है देश की फसल: दिनेश राठौर

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

रायबरेली। शिक्षक वह ज्योति हैं जो खुद को जलाकर सदैव ही ज्ञान की रोशनी फैलाता रहता है। उक्त विचार व्यक्त करते हुए जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी राहुल सिंह ने महराजगंज ब्लॉक से सेवानिवृत्त हुए तीन शिक्षकों को सम्मानित किया। कम्पोजिट विद्यालय कोटवा मदनियां में आयोजित सेवानिवृत्त शिक्षकों के सम्मान कार्यक्रम की अध्यक्षता निवर्तमान ब्लॉक प्रमुख सत्येंद्र सिंह, मुख्य अतिथि बीएसए राहुल सिंह, विशिष्ट अतिथि खण्ड शिक्षा अधिकारी राम मिलन व समाजसेवी दिनेश चंद्र राठौर रहे। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता आरएसएम के प्रदेश अध्यक्ष शिवशंकर सिंह रहे। कार्यक्रम के दौरान प्रधानाध्यापक शिव प्रसाद, प्रेमलता देवी व मीरा देवी का सम्मान अतिथियों ने किया।

जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी राहुल सिंह ने कहा कि शिक्षक वह मोमबत्ती होते हैं, जो खुद जलकर दूसरों को प्रकाश देने का कार्य करते हैं। शिक्षक वह ज्ञान की ज्योति जो हमेशा ही प्रकाश फैलाता रहता है। स्कूल चलो अभियान के तहत उन्होंने शिक्षकों और अभिभावकों से अधिक से अधिक बच्चों का नामांकन कराने के लिए कहा। निवर्तमान ब्लॉक प्रमुख सत्येंद्र सिंह ने कहा कि शिक्षक कभी भी सेवानिवृत्त नहीं होता है, वह सदैव ही ज्ञान का प्रकाश फैलाता रहता है। समाजसेवी दिनेश राठौर ने कहा कि शिक्षा और शिक्षक एक दूसरे के पूरक होते है।

वे अपने ज्ञान की रोशनी के पूरे समाज को रोशन करते रहते हैं। गुरु का हमारे जीवन को संवारने में बहुत बड़ा योगदान रहता है। शिक्षकों की पहचान उनके काम से ही होती है। आरएसएम प्रदेश अध्यक्ष शिव शंकर सिंह ने कहा कि हमें आने वाली पीढ़ी को माँ-बाप की सेवा का भी ज्ञान देने की अति आवश्यकता होगी। बीईओ राम मिलन यादव कहा कि पौराणिक काल से ही गुरु ज्ञान के प्रसार के साथ साथ समाज के विकास का बीड़ा उठा रहे हैं। गुरू अज्ञान रुपी अंधकार से ज्ञान रूपी प्रकाश की ओर ले जाने वाला सशक्त माध्यम होता है। उन्होंने कहा कि सांस्कृतिक संस्कार के ज्ञानदीप शिक्षक होते हैं।

जिलाध्यक्ष वीरेंद्र सिंह ने कहा कि शिक्षक जिस दिन से हम सभी सेवा में आ जाते हैं, उस दिन से सेवानिवृत्त की तिथि भी तय हो जाती है लेकिन शिक्षक का काम समाज शिक्षा की अलख जगाना है जो कि सदैव जारी रहता है। कार्यक्रम के दौरान ही प्राथमिक विद्यालय दौतरा के शिक्षक आशीष सिंह, विष्णु साहू, संजीव बाजपेई व शिक्षक वीरेंद्र प्रजापति को सम्मानित किया गया। विद्यालय के इंचार्ज प्रधानाध्यापक वारिस अली, ब्लॉक अध्यक्ष मधुकर सिंह, सोनिया अवस्थी, स्वाति यादव व धर्मेश यादव ने अतिथियों का सम्मान किया।

कार्यक्रम का संचालन आलोक द्विवेदी व विमला यादव ने किया।

इस मौके पर प्रदेश मंत्री श्वेता, जिला महामंत्री संजय कनौजिया, जयकरन, रणविजय सिंह, यादवेन्द्र सिंह, ब्लॉक महामंत्री राकेश गौतम, हेमंत सिंह, देशबंधु चौरसिया, फूलचंद्र यादव, पंकज सिंह, विनोद कनौजिया, पुनीत सिंह, मिथलेश कुमार, राम लखन, मोहित कुमार, श्रीकांत यादव, राम प्रताप सिंह, स्वयंबर सिंह, बजरंग नारायण, अजय कुमार पटेल, नंद कुमार, शायकुल निशां, राम प्रकाश, शिव प्रताप सिंह, छोटेलाल गौतम, मनीष मौर्य, शिल्पी गुप्ता, सुभाष सिंह, मीनाक्षी पाण्डेय, राम लखन, डॉ0 संदीप सोनकर, अनुराग सिंह, अरविन्द यादव, नीलिमा श्रीवास्तव, कविता गौतम, शिल्पी गुप्ता, नंद कुमार, मीनाक्षी पाण्डेय, गीता श्रीवास्तव, राधारानी आदि लोग मौजूद रहे।

कंपोजिट विद्यालय उमरिया खैराबाद में स्कूल चलो अभियान रैली निकाली गई

खैराबाद, सीतापुर स्थानीय कंपोजिट विद्यालय उमरिया में आज विभागीय आदेशानुसार सेवित क्षेत्र के अभिभावकों को अपने 6 से 14 वर्ष के बच्चों को विद्यालय में नामांकन के लिए प्रेरित करने हेतु स्कूल चलो अभियान रैली बहुत धूमधाम से निकाली गई। प्रधानाध्यापक नरेश कुमार मिश्र के नेतृत्व मे रैली उमरिया से प्रारम्भ होकर गंगापुर, जिला मऊ व कासिमपुर गांव में भ्रमण करते हुए प्राथमिक विद्यालय कासिमपुर पहुंची जहां संकुल भवन में बच्चों को जानकारी प्रदान की गई उसके बाद रैली समाप्त हुई। सुबह से ही बच्चों में रैली के प्रति बहुत उत्साह था। बच्चे अपने हाथों में नामांकन बढ़ाने व शिक्षा के प्रति जागरूक करने वाले नारों से लिखी तख्तियां हाथ में लेकर जोरदार उद्घोष कर रहे थे। रैली मे विद्यालय की शिक्षक, शिक्षिकाओं में रोली मौर्या, शोभना सिंह, रंजीता मौर्या, दीप्ति यादव, प्रीती त्रिवेदी, प्रतिभा, राजेश कुमार, रंजना सिंह, गुरमीत कौर, रेनू यादव, नीतू अग्रवाल, अजय कुमार त्रिपाठी व जय देवी, ऊषा, रामेश्वरी, सुनीता, व रेखा का बहुत ही सराहनीय योगदान रहा।

बाल चित्रशाला प्रतियोगिता एवं समापन समारोह सम्पन्न

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

लखनऊ। राजधानी लखनऊ में 08 अप्रैल 2026 विराम खंड-5 जन कल्याण समिति द्वारा सोमेश्वर महादेव मंदिर, एम.आई.जी. परिसर में आयोजित बाल चित्रशाला प्रतियोगिता एवं समापन समारोह अत्यंत उत्साह एवं उल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. भरत राज सिंह, महानिदेशक (तकनीकी), एसएमएस तथा अध्यक्ष, विराम-5 जनकल्याण उपसमिति उपस्थित रहे। कार्यक्रम के अंतर्गत बच्चों के लिए दो आयु वर्गों - 10 वर्ष तक तथा 15 वर्ष तक - में चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित की गई। मुख्य अतिथि प्रो. भरत राज सिंह ने विजेता बच्चों को पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र वितरित किए तथा बच्चों की रचनात्मक प्रतिभा की सराहना की उन्होंने कहा कि इस प्रकार की प्रतियोगिताएं बच्चों में आत्मविश्वास, सृजनात्मकता और सांस्कृतिक चेतना का विकास करती हैं। इस अवसर पर 4-5 अप्रैल 2026 को मधुबनी चित्रकला कार्यशाला का भी आयोजन किया गया था, जिसमें बच्चों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और पारंपरिक कला के विविध आयामों को सीखा। कार्यक्रम का आयोजन डॉ. आर.पी. शर्मा एवं शर्मा द्वारा किया गया, जबकि संयोजन अरुण त्रिवेदी, सचिव, विराम-5 जनकल्याण उपसमिति ने किया। बच्चों के चित्रों का आकलन डा. गर्ग द्वारा किया गया। समारोह में बड़ी संख्या में बच्चों, अभिभावकों एवं परिवारजनों की उपस्थिति रही, जिन्होंने बच्चों का उत्साहवर्धन किया। कार्यक्रम का वातावरण अत्यंत प्रेरणादायक एवं सांस्कृतिक रंगों से परिपूर्ण रहा।

अल्लामा फ़ज़ले हक़ खैराबादी मेमोरियल कॉलेज खैराबाद में परीक्षाफल वितरण समारोह कार्यक्रम सम्पन्न

● परिश्रम करने से हमेशा अच्छी कामियाबी हासिल होती है:-काज़िम हुसैन संस्था संस्थापक

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

खैराबाद सीतापुर स्थानीय शिक्षण संस्था अल्लामा फ़ज़ले हक़ खैराबादी मेमोरियल कॉलेज कटरा में सत्र 2025-2026 का प्री प्राइमरी से सीनियर सेकेंडरी प्रथम यानी कक्षा ग्यारह तक के बच्चों को परीक्षाफल वितरण किया गया जिसमें प्रत्येक कक्षा में प्रथम द्वितीय एवं तृतीय स्थान पाने वाले छात्र छात्राओं को संस्था संस्थापक काज़िम हुसैन ने पुरस्कार देकर सम्मानित करते हुए उनका उत्साह वर्धन किया तथा उन्हें उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएं एवं आशीर्वाद भी प्रदान किया,इस अवसर पर श्री हुसैन ने कहा कि अगर हम मेहनत करेंगे तो उसके अच्छे परिणाम भी हमें अवश्य प्राप्त होंगे इस लिए कभी भी मेहनत करने से घबराएं नहीं तथा जिन बच्चों के नम्बर कम आए हैं उन्हें निराश होने की जरूरत नहीं है वो भी मेहनत करें ताकि आने वाले समय में वह भी अच्छे अंक प्राप्त कर सकें संस्था के प्रधानाचार्य एहतिशाम आलम उप प्रधानाचार्या रुबीना परवीन ने कहा कि मेहनत किसी की भी बेकार नहीं जाती उसका उसके जीवन में लाभ अवश्य मिलता है कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले बच्चों में प्री प्राइमरी प्रथम में अयनांश कुमार 95%, उमरा 87%, कक्षा एक में फारिया 93%,दो में मरियम 96%, तीन में अदीबा 95%, चार में अलीशा 96%, पांच में अब्दुर्रहमान 91%, छ में हादिया 94%, सात में फ़ाज़ला 95%, आठ में ज़िकरा 91%, नौ में अरीशा 92% ग्यारह में नसीबा अंसारी 88% अंक पाकर प्रथम स्थान प्राप्त किया।अन्य संबोधित करने वाले शिक्षकों में हाफ़िज़ मुशीर अहमद, उमैर आज़ाद,कामरान खान, निकहत जहां, तथा प्रबंधक ने भी अपना आशीर्वाद बच्चों को देते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की।

दिनदहाड़े बाइक व कार सवारों में मारपीट से बाजार में दहशत

राहगीरों और दुकानदारों मे मची अफरातफरी

लालगंज (रायबरेली)। कस्बे के नई बाजार मोहल्ला में सोमवार दोपहर अचानक मारपीट हो गई। बाइक सवार और कार सवार युवकों के बीच विवाद ने देखते ही देखते हिंसक रूप ले लिया। इससे बाजार में अफरा तफरी मच गई। लोगों में दहशत फैल गई। स्कूल से लौट रहे बच्चे भी सहम गए। प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक दो बाइकों पर सवार युवक हाथों में लाठी डंडा लेकर पहुंचे। उन्होंने एसबीआई बैंक शाखा के पास कार सवार युवकों को रोक लिया। कार के रुकते ही बाइक सवारों ने ताबड़तोड़ हमला किया। कार का साइड और पीछे का शीशा तोड़ दिया। इसके बाद कार से उतरे युवक भी डंडों के साथ भिड़ गए। दोनों पक्षों में देर तक जमकर मारपीट हुई। यह देखकर आसपास के दुकानदार घबरा गए। सड़क के दोनों ओर वाहन थम गए और जाम लग गया। घटना के बाद दोनों पक्ष मौके से फरार हो गए। हाथों में डंडे लेकर भागते युवकों को देखकर स्कूल से लौट रहे बच्चे सहम गए। प्रत्यक्ष दर्शनों ने बताया कि मारपीट में दोनों पक्षों से करीब एक दर्जन युवक शामिल रहे। पुलिस ने बताया कि मामले का कोई शिकायती पत्र नहीं प्राप्त हुआ है।

विधायक श्याम सुंदर भारती के प्रयास से सारीपुर गांव में लगी हाई मास्क लाइट, गांव हुआ रोशन

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

महराजगंज/रायबरेली: क्षेत्र के सारीपुर गांव में स्थित सैकड़ों वर्ष पुरानी सुविख्यात बाबा बिहारी दास की कुटी परिसर अब हाई मास्क लाइट से जगमगा उठा है। समाजवादी पार्टी के बछरावां विधानसभा क्षेत्र के विधायक श्याम सुंदर भारती के प्रयास से करीब तीन लाख रुपये की लागत से यह हाई मास्क लाइट स्थापित कराई गई है। इस लाइट के लगने से गांव में रात के समय पर्याप्त रोशनी उपलब्ध हो सकेगी, जिससे ग्रामीणों को आवागमन में सुविधा होगी और सुरक्षा व्यवस्था भी बेहतर होगी। विधायक श्याम सुंदर भारती ने बताया कि उनका उद्देश्य संपूर्ण विधानसभा क्षेत्र को 'अंधेरा मुक्त' बनाना है। इसी क्रम में गांवों, प्रमुख चौराहों, सब्जी मंडियों, मंदिरों और मस्जिदों पर हाई मास्क लाइटें लगवाई जा रही हैं। इस कार्य से खुश होकर ग्रामीणों ने विधायक का तहे दिल से स्वागत करते हुए उनकी सराहना की। गांव में इस पहल को विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है। धन्यवाद ज्ञापित करने वालों में प्रमुख रूप से सुरेंद्र श्रीवास्तव, जगदेव प्रजापति, विंधा यादव, रामसुख मौर्य, सुमित श्रीवास्तव, दिलीप जायसवाल, काशी प्रसाद मौर्य, नीरज शर्मा, सुखनंदन मौर्य, रामनेवाज मौर्य, राम सजीवन मौर्य, रामनरेश मौर्य, दीपक जायसवाल, अवधेश अवस्थी, निहाल अवस्थी, राजेश शर्मा, हरिप्रसाद मिश्र, राघवेंद्र श्रीवास्तव सुरेंद्र निर्मल सूरज निर्मल रूपचंद रैदास अभिषेक रैदास, विक्की रैदास गोपाल श्रीवास्तव, रमाकांत श्रीवास्तव, नीरज श्रीवास्तव, कैलाश नाथ श्रीवास्तव, संदीप मौर्य, नन्हूं रैदास, राम प्रकाश, शिवकरण यादव, सतीश यादव सहित सैकड़ों ग्रामीण शामिल रहे।

कमर्शियल एलपीजी सिलिंडर की सप्लाई अब प्रारंभ, शादी कार्ड या आर्डर बुकिंग दिखाने पर मिलेंगे

● यूपी आदर्श टेंट और कैटरिंग एवं डेकोरेशन व्यापार मंडल को एडीएम ने दिया आश्वासन

● जिला आपूर्ति कार्यालय या एडीएम कार्यालय में प्रपत्र प्रस्तुत करने वालों को मिलेंगे सिलिंडर

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

लखनऊ। पश्चिम एशिया में युद्ध की स्थिति के कारण कमर्शियल एलपीजी सिलिंडर की सप्लाई पर लगाई गई रोक अब हटा ली गई है। शादी समारोहों और दूसरे आयोजनों के लिए एलपीजी कमर्शियल सिलिंडर के लिए अब भटकना नहीं पड़ेगा। उत्तर प्रदेश आदर्श टेंट, कैटरिंग एवं डेकोरेशन व्यापार मंडल के पदाधिकारियों के प्रतिनिधि मंडल को प्रशासन ने बुधवार को आश्वासन दिया है कि शादी कार्ड या बुकिंग आर्डर दिखाने पर जरूरत के अनुसार सिलिंडर जारी किए जाएंगे।

उत्तर प्रदेश आदर्श व्यापार मंडल के प्रदेश अध्यक्ष संजय गुप्ता के नेतृत्व में अपर जिलाधिकारी खाद्य ज्योति गौतम से मिला। इस दौरान कैटरिंग क्षेत्र के व्यापारियों ने अपर जिला अधिकारी को अवगत कराते हुए कहा 15 अप्रैल से वैवाहिक समारोह की सहालग शुरू हो रही है। ऐसे में कैटरिंग क्षेत्र के व्यापारियों के सामने कमर्शियल गैस सिलिंडर की व्यवस्था बहुत बड़ी मुसीबत है।

कैटरिंग क्षेत्र के व्यापारियों को वैवाहिक समारोह के अवसर पर कमर्शियल गैस सिलेंडर की सुगमता से आपूर्ति अति आवश्यक है क्योंकि इससे व्यापार के साथ-साथ आम जनमानस की प्रतिष्ठा भी जुड़ी रहती है। अपर जिलाधिकारी ने व्यापारियों से कहा शादी कार्ड एवं आर्डर बुकिंग के प्रपत्र के साथ जिला आपूर्ति कार्यालय अथवा अपर जिलाधिकारी खाद्य एवं आपूर्ति के कार्यालय पर कैटरर्स अथवा जिनके घर में वैवाहिक कार्यक्रम है के पत्र देकर कमर्शियल गैस सिलेंडर की मांग प्रस्तुत की जा सकती है। मांग के अनुसार संबंधित गैस एजेंसी को उनकी मांग भेज कर कमर्शियल गैस सिलेंडर की आपूर्ति सुनिश्चित कराई जाएगी। उन्होंने आश्वासन दिया वैवाहिक समारोह में किसी भी प्रकार की समस्या नहीं आने पाएगी उत्तर प्रदेश आदर्श व्यापार मंडल के प्रदेश अध्यक्ष संजय गुप्ता के साथ प्रतिनिधि मंडल में उत्तर प्रदेश आदर्श टेंट, कैटरिंग एवं डेकोरेशन व्यापार मंडल के चेयरमैन राघवेंद्र चौधरी, अध्यक्ष संतोष गुप्ता, लखनऊ के उपाध्यक्ष मोहम्मद रिजवान, आयुष पांडे और संजीव सिंह शामिल थे।

संक्षिप्त खबरें

ऑपरेशन के बाद महिला की मौत, आरोपी डॉक्टरों की गिरफ्तारी न होने पर पति ने दी आत्मदाह की चेतावनी

बलिया: जिले के अपूर्वा नर्सिंग होम में पथरी के ऑपरेशन के दौरान हुई एक महिला की मौत का मामला अब तूल पकड़ता जा रहा है। आरोपियों की गिरफ्तारी न होने से आक्रोशित मृतका के पति ने आत्मदाह की चेतावनी दी है। बुधवार को मृतका अनीषा राय के पति शिवांशु राय कलेक्ट्रेट पहुंचे और जिलाधिकारी को संबोधित एक ज्ञापन अपर जिलाधिकारी को सौंपा। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि एक सप्ताह के भीतर आरोपी चिकित्सकों की गिरफ्तारी नहीं की गई, तो वह 17 अप्रैल को सुबह 11 बजे जिलाधिकारी कार्यालय पर आत्मदाह करेंगे। इसके लिए उन्होंने जिला प्रशासन, जिलाधिकारी और पुलिस अधीक्षक को जिम्मेदार ठहराया है। शिवांशु राय के अनुसार, उनकी पत्नी की 22 मार्च 2026 को अपूर्वा नर्सिंग होम में पथरी के इलाज के दौरान मौत हो गई थी। उन्होंने डॉ. ज्योत्सना सिंह सहित अन्य डॉक्टरों पर लापरवाही और हत्या का आरोप लगाया है। इस मामले में बलिया कोतवाली में पांच चिकित्सकों के खिलाफ हत्या का मुकदमा भी दर्ज किया जा चुका है। घटना के पंद्रह दिन से अधिक समय बीतने के बावजूद अब तक किसी भी आरोपी की गिरफ्तारी नहीं हुई है। इसे लेकर मृतका के पति ने पुलिस कार्रवाई पर सवाल उठाए हैं और आरोप लगाया है कि जानबूझकर देरी की जा रही है। उन्होंने चेतावनी दोहराते हुए दोषी डॉक्टरों के खिलाफ सख्त कार्रवाई और बुलडोजर चलाने की मांग भी की।

तालानगरी को जल्द मिलेगी ट्रिपिंग से राहत, अलीगढ़ में बनाया जाएगा नया बिजलीघर; जगह चिह्नित

अलीगढ़। औद्योगिक विकास को गति देने के लिए प्रशासन सख्त नजर आ रहा है। बुधवार को कलक्ट्रेट सभागार में आयोजित जिला उद्योग व व्यापार बंधु की बैठक में डीएम संजीव रंजन ने कहा कि उद्यमियों को बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध कराने में लापरवाही सहन नहीं की जाएगी। बैठक में तालानगरी व सीडीएफ क्षेत्र में बिजली आपूर्ति, ट्रिपिंग की समस्या व 132 केवीए बिजलीघर की स्थापना जैसे मुद्दों पर चर्चा हुई। उद्यमियों ने भूमि उपलब्धता न होने की समस्या उठाई। यूपीएसआइडीसी के अधिकारियों ने छेरत में उपकेंद्र स्थापना का प्रस्ताव भेजे जाने की जानकारी दी। डीएम ने ब्रेकडाउन की स्थिति में वाट्सएप के माध्यम से तत्काल सूचना दी जाए। इससे उद्योगों को अनावश्यक नुकसान न हो। एमएसएमई विभाग ने विकसित प्लेज पार्क में प्लाट आवंटन व वहां तक संपर्क मार्ग के चौड़ीकरण पर भी फोकस किया। मार्ग में बाधा बनी विद्युत लाइनों को शिफ्ट करने के निर्देश दिए गए। पीपीपी माडल पर प्लेज़ पार्क के विकास को आगे बढ़ाने की बात कही गई। नवीन औद्योगिक आस्थान ख्यामाई में प्लग एंड प्ले आधार पर शेड विकसित करने व मूलभूत सुविधाएं सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए। उद्यमियों को अनावश्यक नोटिस न दिए जाने पर भी चर्चा हुई। व्यापार बंधु बैठक में सेंटर प्वाइंट क्षेत्र में हैंडपंप व शौचालय निर्माण के लिए नगर निगम को कार्रवाई के निर्देश दिए गए। डीएम ने कहा कि औद्योगिक विकास के लिए सभी विभागों को आपसी समन्वय के साथ कार्य करना होगा।

अलीगढ़: दिल्ली-कानपुर हाईवे पर भीषण सड़क हादसा, टेंपो-कार टक्कर में पांच घायल

(अलीगढ़)। दिल्ली-कानपुर हाईवे पर कन्होई मोड़ के पास सवारियों से भरे टेंपो में कार ने टक्कर मार दी। हादसे में टेंपो चालक समेत पांच लोग घायल हो गए। जिन्हें पुलिस ने उपचार के लिए जिला अस्पताल में भर्ती कराया है। पुलिस के अनुसार मंगलवार की देर शाम को करीब साढ़े सात बजे एक टेंपो भांकरी स्थित निजी फैक्टरी से सवारियों को लेकर रिलायंस पेट्रोल पंप पर सीएनजी डलवाकर विपरीत दिशा में कस्बे के लिए आ रहा था। तभी कन्होई मोड़ के पास सामने से आ रही स्कार्पियो कार ने टेंपो में टक्कर मार दी। हादसे में टेंपो चालक बच्चू के अलावा सुनील, अनारो देवी, सविता देवी, मंजू निवासीगण नगला नत्था घायल हो गए। सूचना पर पहुंची पुलिस ने घायलों को टोल एंबुलेंस की मदद से उपचार के लिए जिला अस्पताल में भर्ती करा दिया है। इंस्पेक्टर राजेश कुमार ने बताया कि कार को कब्जे में लेकर थाना भिजवा दिया है। मामले में कोई शिकायती प्रार्थना पत्र नहीं आया है।

अमेरिका-ईरान युद्धविराम के बीच बोले पीट हेगसेथ- ईरान का भविष्य हमारे हाथों में है

● पेंटागन में एक ब्रीफिंग में बोलते हुए, हेगसेथ ने कहा कि राष्ट्रपति ट्रंप ने इस भीषण संकट के समय में एक अभूतपूर्व कदम उठाया है। हेगसेथ ने आगे कहा कि युद्धविराम से ठीक पहले के अंतिम कुछ घंटों में राष्ट्रपति ट्रंप के फैसलों ने 'इतिहास रच दिया' और युद्ध की दिशा बदल दी।

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

अमेरिका और ईरान के बीच दो सप्ताह के युद्धविराम पर सहमति बनने के कुछ घंटों बाद, युद्ध सचिव पीट हेगसेथ ने कड़े बयान जारी करते हुए कहा कि अमेरिकी नेतृत्व ने संघर्ष में स्पष्ट बढ़त हासिल कर ली है। उनके ये बयान अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा अचानक युद्धविराम की घोषणा के बाद वैश्विक स्तर पर मची गहन जांच के बीच आए। पेंटागन में एक ब्रीफिंग में बोलते हुए, हेगसेथ ने कहा कि राष्ट्रपति ट्रंप ने इस भीषण संकट के समय में एक अभूतपूर्व कदम उठाया है। हेगसेथ ने आगे कहा कि युद्धविराम से ठीक पहले के अंतिम कुछ घंटों में राष्ट्रपति ट्रंप के फैसलों ने 'इतिहास रच दिया' और युद्ध की दिशा बदल दी।

ईरान का भविष्य हमारे हाथों में है

अपने सबसे मुखर बयानों में से एक में अमेरिकी युद्ध सचिव ने घोषणा की कि ईरान का भविष्य हमारे हाथों में है यह संकेत देते हुए कि युद्धविराम पर सहमति के बावजूद वाशिंगटन के पास रणनीतिक और सैन्य शक्ति बनी हुई है। उन्होंने दावा किया कि युद्धविराम से पहले ही अमेरिका ने युद्धक्षेत्र में एक महत्वपूर्ण बढ़त हासिल कर ली थी। उन्होंने आगे कहा कि अमेरिकी सेनाओं ने एक निर्णायक सैन्य विजय प्राप्त की थी जिसने प्रशासन को मजबूत स्थिति से बातचीत करने का आत्मविश्वास दिया।

ईरान कभी भी परमाणु हथियार हासिल नहीं करेगा

वाशिंगटन के दृढ़ रुख को दोहराते हुए, हेगसेथ ने दावा किया कि ईरान कभी भी परमाणु हथियार हासिल नहीं कर पाएगा। उन्होंने कहा कि युद्धविराम की शर्तें अमेरिका के दीर्घकालिक सुरक्षा उद्देश्यों के अनुरूप थीं। हेगसेथ ने आगे कहा कि ईरान को पूरी तरह से कुचलने के लिए आर्थिक और सैन्य विकल्प उपलब्ध थे। अमेरिकी युद्ध सचिव ने कहा, 'राष्ट्रपति ट्रम्प ईरान की अर्थव्यवस्था को तबाह कर सकते थे, लेकिन उन्होंने संयम बरता। उन्होंने युद्धविराम के दौरान राजनयिक बातचीत का रास्ता चुनकर दया दिखाई।

अलीगढ़ की रामघाट रोड पर मिलेगी पार्किंग और हरियाली, सफर होगा जाम मुक्त

अलीगढ़। सीएम ग्रिड योजना में शामिल रामघाट रोड को स्तरीय व आकर्षक बनाया जाएगा। मीनाक्षी पुल से क्वार्सी थाना तक लगभग 2.65 किलोमीटर लंबे मार्ग पर पूर्व में सीसी सड़क निर्माण का काम शामिल था। नगर निगम स्तर से नाला का मरम्मतीकरण भी कराया जा रहा था। ये सड़क 15.69 करोड़ रुपये से तैयार की जानी थी। मगर, अब इस सड़क को पार्किंग सुविधा, इंटरलाकिंग ईंट का फुटपाथ, आकर्षक लाइटिंग व थीम आधारित (एकरूपता वाले पेड़-पौधे) पौधारोपण से युक्त किया जाएगा। रामघाट रोड पर पार्किंग की समुचित व्यवस्था न होने से हमेशा जाम की स्थिति रहती है। मगर अब पार्किंग स्थल बनने से इस सड़क पर जनता का सफर जाम मुक्त होगा। शासन से एक बार निर्माण कार्य के लिए अनुमति मिलने के बाद दोबारा नए काम जोड़ते हुए नगर निगम की ओर से प्रस्ताव भेजा गया था। अब ये कार्य 24.39 करोड़ रुपये की लागत से कराए जाएंगे। हालांकि फुटपाथ व नाला का काम पूरा होने के बाद चौड़ी जगह की उपलब्धता के अनुसार पार्किंग की व्यवस्था की जानी है।

बलिया में अमर शहीद मंगल पांडेय को श्रद्धांजलि: माल्यार्पण, राष्ट्रगान और गार्ड ऑफ ऑनर के साथ याद किया शौर्य

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

बलिया: 1857 की क्रांति के महानायक मंगल पांडेय के शहादत दिवस पर बुधवार को जनपद में उन्हें श्रद्धापूर्वक नमन किया गया। शहर के कदम चौराहा स्थित उनकी प्रतिमा पर माल्यार्पण कर लोगों ने देशभक्ति के इस अमर नायक को याद किया। इस दौरान झंडारोहण के बाद राष्ट्रगान गाया गया, वहीं पुलिस प्रशासन द्वारा गार्ड ऑफ ऑनर देकर उन्हें सलामी दी गई।

सुबह सात बजे से ही कार्यक्रमों की शुरुआत हो गई थी। सरस्वती शिशु मंदिर भृगु आश्रम, पार्वती शिक्षा निकेतन, शिव बाबा शिक्षा निकेतन और भृगु शिक्षण संस्थान के बच्चों ने प्रभातफेरी निकाली। प्रभातफेरी शहर के विभिन्न मार्गों से गुजरी, जिसमें बच्चे 'मंगल पांडेय अमर रहें' के नारों से माहौल को देशभक्ति से सराबोर करते नजर आए। कदम चौराहे पर आयोजित विचार गोष्ठी में वक्ताओं ने मंगल पांडेय के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि बैरकपुर छावनी में एक सिपाही के रूप में उन्होंने अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ विद्रोह की जो चिंगारी जलाई, वही आगे चलकर स्वतंत्रता संग्राम की बड़ी लौ बनी। वक्ताओं ने युवाओं से उनके आदर्शों से प्रेरणा लेने का आह्वान किया। कार्यक्रम में शहीद मंगल पांडेय स्मारक समिति के अध्यक्ष शशिकांत चतुर्वेदी, मंत्री राजकुमार पांडेय, सियाराम यादव, संतोष तिवारी सहित भाजपा जिलाध्यक्ष संजय मिश्र ने प्रतिमा पर माल्यार्पण किया।

इस अवसर पर अनिल राय, रामनाथ पटेल, श्रीभगवान यादव, रामजी गुप्ता, जगमोहन, पदूमदेव विंद, पूर्व सैनिक हरि बल्लभ तिवारी, विजय शंकर पांडेय, हरिन्द्र पांडेय, अंगद सिंह, आईएमए के अध्यक्ष डॉ. डी. राय, कांग्रेस नेता जैनेन्द्र कुमार पांडेय, रुपेश चौबे, संतोष चौबे, रजनीश यादव, दुर्गा दत्त त्रिपाठी, राजनाथ पांडेय, शेख अमर उल्लाह, राजन कौन्जीया, पप्पू पांडेय, श्रीकांत उपाध्याय, रमाशंकर तिवारी सहित विभिन्न राजनीतिक दलों के नेता, सामाजिक कार्यकर्ता, साहित्यकार, पत्रकार और बड़ी संख्या में आमजन उपस्थित रहे।

बंगाल चुनाव: 'यहां से दफा हो जाओ', टीएमसी नेताओं से चुनाव आयोग, डेरेक ओ'ब्रायन का si पर गंभीर आरोप

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

ब्यूरो प्रयागराज। तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) के राज्यसभा सांसद डेरेक ओ'ब्रायन ने चुनाव आयोग (ईसी) के साथ हुई बैठक के बाद प्रेस कॉन्फ्रेंस की। इस दौरान उन्होंने दावा किया कि मुख्य चुनाव आयुक्त ने उनके प्रतिनिधिमंडल के साथ बेहद असम्मानजनक व्यवहार किया और बैठक के महज 7 मिनट के भीतर उन्हें वहां से जाने के लिए कह दिया। डेरेक ओ'ब्रायन ने कहा कि वे अपनी पार्टी के प्रतिनिधियों के साथ पूरी तैयारी के साथ चुनाव आयोग के पास गए थे। उन्होंने बताया कि उनकी पार्टी की प्रमुख ममता बनर्जी की ओर से चुनाव आयोग को 9 चिट्ठियां भेजी गई थीं, लेकिन उनमें से किसी का भी न तो जवाब दिया गया और न ही कोई संज्ञान लिया। उन्होंने कहा कि यह अपने आप में गंभीर मामला है, क्योंकि एक संवैधानिक संस्था को इस तरह की चिट्ठियों को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए।

ओ'ब्रायन के मुताबिक, बैठक सुबह करीब 10 बजकर 2 मिनट पर शुरू हुई और 7-8 मिनट में ही खत्म हो गई। इस दौरान उन्होंने चुनाव प्रक्रिया से जुड़े कुछ अहम मुद्दे उठाए। उन्होंने आरोप लगाया कि कुछ ऐसे अधिकारी चुनाव प्रक्रिया में शामिल हैं, जिनका संबंध भारतीय जनता पार्टी से है। उन्होंने ऐसे 6 उदाहरण चुनाव आयोग के सामने रखे और कहा कि इससे चुनाव की निष्पक्षता पर सवाल खड़े होते हैं। उन्होंने यह भी बताया कि उन्होंने अधिकारियों के ट्रांसफर और नियुक्तियों को लेकर भी चिंता जताई। उनका कहना था कि अगर इस तरह के अधिकारियों को जिम्मेदारी दी जाएगी, तो स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव कैसे संभव हो पाएंगे। लेकिन जैसे ही उन्होंने ये मुद्दे उठाए, मुख्य चुनाव आयुक्त ने उन्हें बीच में रोक दिया और कथित तौर पर 'यहां से निकल जाओ' कह दिया। डेरेक ओ'ब्रायन ने इस पूरे घटनाक्रम को शर्मनाक बताया। उन्होंने कहा कि अपने 22 साल के राजनीतिक करियर और 16 साल के संसदीय अनुभव में उन्होंने कभी भी किसी संवैधानिक संस्था के साथ ऐसी स्थिति नहीं देखी। उन्होंने खुली चुनौती देते हुए कहा कि अगर चुनाव आयोग के पास बैठक का वीडियो या ऑडियो रिकॉर्ड है, तो उसे सार्वजनिक किया जाए ताकि सच सामने आ सके। उन्होंने यह भी कहा कि जब उनका प्रतिनिधिमंडल बाहर निकल रहा था, तब उनके एक सहयोगी ने मुख्य चुनाव आयुक्त को बधाई दी कि वे भारत के इतिहास में पहले ऐसे मुख्य चुनाव आयुक्त हैं, जिनके खिलाफ लोकसभा और राज्यसभा में हटाने के नोटिस दिए गए हैं।ओ'ब्रायन ने आगे बताया कि इस मुद्दे को लेकर सभी विपक्षी दल एकजुट हो रहे हैं।

उन्होंने कहा कि जब वे बैठक में पहुंचे, तो शुरुआत में ही यह कहा गया कि उनका प्रतिनिधिमंडल अधिकृत नहीं है, जबकि वे पूरी तरह अधिकृत होकर गए थे। इसके बाद जब उन्होंने अपने मुद्दे रखने शुरू किए, तो उन्हें बोलने का मौका ही नहीं दिया गया।ओ'ब्रायन ने कहा कि लोकतंत्र में चुनाव आयोग जैसी संस्थाओं की निष्पक्षता बेहद जरूरी है और अगर इस पर सवाल उठते हैं, तो यह पूरे सिस्टम के लिए चिंता की बात है।

ओखला पक्षी विहार बनेगा विश्वस्तरीय इको टूरिज्म और रिसर्च केंद्र, वन विभाग ने तैयार की परियोजना

स्वतंत्र प्रभात
जो लिखेगा, वही दिखेगा
ब्रेकिंग न्यूज़

नोएडा। ओखला पक्षी विहार को विश्वस्तरीय इको टूरिज्म और रिसर्च केंद्र विकसित करने की तैयारी है। वन विभाग इको टूरिज्म को प्रमोट करने के लिए परियोजना तैयार कर चुका है। इस सम्बंध में वन विभाग प्राधिकरण से साथ कई बैठक कर चुका है। शासन के आदेश मिलते ही इस प्रोजेक्ट को जमीनी स्तर पर लाया जाएगा और काम शुरू होगा। खास बात यह कि इस योजना के तहत पर्यटक बढ़ाने पर जोर दिया जा रहे बल्कि पक्षियों की संख्या में बढ़ोतरी हो इस पर भी वैज्ञानिक तरीके भी अपनाए जाएंगे।

वन विभाग का रिसर्च और कंजर्वेशन पर अधिक जोर है । इसकी खासियत है कि यहां अत्याधुनिक रिसर्च केंद्र बनाए जाएंगे। इन केंद्रों में स्कूली और कॉलेज के छात्रों को पक्षियों पर शोध करने का अवसर दिया जाएगा। साथ ही शोधकर्ता पक्षियों, पानी, मिट्टी पर शोध कर सकेंगे। इससे शोध क्षेत्र को बढ़ावा मिलेगा बल्कि पारिस्थितिक तंत्र को आसानी से समझने में भी मदद मिल सकेगी। साथ प्रजातियों के अनुसार हैबिटेट, नेस्टिंग साइट्स सुरक्षित आवास विकसित किए जाएंगे।

पर्यटकों को मिलेगी सुविधा

पर्यटकों को सुविधा देने के लिए विहार में कई बदलाव किए जा रहे हैं। नेचर ट्रेल, साइक्लिंग ट्रक, गाइड टायर, वॉच टावर जैसी सुविधा पर्यटकों की दी जाएगी। विहार में पहुंचने वाले पर्यटकों को खानपान की सुविधा भी मिल सकेगी।

ईरान बोला शुक्रिया भारत, पाकिस्तान पर भड़का यूएई

● ईरानी हमलों में यूएई को सबसे बड़ा नुकसान हुआ। तेल सुविधाएं, जहाज, अर्थव्यवस्था सब प्रभावित हुई। अब सीज फायर हुआ है तो यूई को लग रहा है कि वह ठगा गया है क्योंकि हॉर्न स्टेट अभी भी पूरी तरह से नहीं खुला है।

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

सीजफायर के महज 24 घंटे के अंदर भारत ने वो कर दिखाया जिसने पाकिस्तान की नींद उड़ा दी है। जी हां, पाकिस्तान ने सीज फायर कराया। यह कहना है पाकिस्तानियों का। लेकिन अमेरिका ईरान के बीच दो हफ्ते का यह जो सीज फायर हुआ है, हॉर्मोज स्टेट पर जो तनाव थमा है, दुनिया ने जो राहत की सांस ली है, ठीक उसी वक्त भारत के विदेश मंत्री डॉ. एस जयशंकर अचानक संयुक्त अरब अमीरात यानी यूएई के दो दिवसीय दौरे 11 से 12 अप्रैल 2026 पर जा रहे हैं। पाकिस्तान की सांसे फूली हुई है। लेकिन इस बीच ईरान के सुप्रीम लीडर के भारत में प्रतिनिधि डॉक्टर अब्दुल माजिद हकीम इलाही ने दिल्ली में बैठकर अमेरिका ईरान सीज फायर पर ऐसा ऐलान कर दिया बयान दे दिया कि पाकिस्तान अमेरिका दोनों के होश उड़ गए। उन्होंने साफ कह दिया कि अमेरिका खुद चाहता था सीज फायर कराना। हमने कुछ नहीं कहा। लेकिन इस ईरान को कोई नहीं हरा सकता है और पाकिस्तान वह तो पहले से ही टेंशन में था।

यूएई ने अपना 3.5 अरब डॉलर करीब 29,000 करोड़ का पुराना कर वापस मांग लिया। तुरंत दो। पाकिस्तान की अर्थव्यवस्था जो सालों से यूएई के एहसानों यूएई की गुलामी करके टिकी हुई थी। आज वही यूएई उसे बेचारा जरूरतमंद बता रहा है। यानी पैसा भी दो और गाली भी सुनो। पाकिस्तानी नेता मुशाहिद हुसैन सैयद टीवी पर बैठकर यूएई का मजाक उड़ाते दिखे भारत के खिलाफ अखंड भारत का डर भी दिखा रहे थे।

डोनाल्ड ट्रंप ने ट्रुथ सोशल पर सीज फायर का ऐलान कर दिया। अब पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ और आर्मी चीफ आसिम मुनीर ने मध्यस्था की। ऐसा उन्होंने कहा। अब ईरान को हॉर्म स्टेट खोलने की शर्त रखी गई है। दुनिया ने राहत की सांस जरूर ली है और ठीक 24 घंटे बाद भारत का विदेश मंत्रालय बयान जारी करता है कि विदेश मंत्री डॉ. एस जयशंकर 11 से 12 अप्रैल 2026 को यूएई जा रहे हैं आधिकारिक यात्रा पर। एमए का बयान साफ था कि दोनों देशों के बीच घनिष्ठ सहयोग की समीक्षा होगी।

ईरानी हमलों में यूएई को सबसे बड़ा नुकसान हुआ। तेल सुविधाएं, जहाज, अर्थव्यवस्था सब प्रभावित हुई। अब सीज फायर हुआ है तो यूई को लग रहा है कि वह ठगा गया है क्योंकि हॉर्न स्टेट अभी भी पूरी तरह से नहीं खुला है। सच्चाई है ये। ईरान ओमान मिलकर टोल वसूलने की तैयारी में है और यूएई को भरपाई नहीं मिल पा रही है और भारत भारत यूएई का सबसे भरोसेमंद पार्टनर है। 43 लाख भारतीय वहां रहते हैं। दोनों देशों के बीच 100 अरब डॉलर से ज्यादा का व्यापार होता है। रक्षा ऊर्जा सुरक्षा हर क्षेत्र में साझेदारी है और डॉक्टर जयशंकर की यात्रा सिर्फ मुलाकात नहीं बल्कि रणनीतिक संदेश है कि भारत क्षेत्रीय स्थिरता का गारंटर है। पाकिस्तान के लिए यह खबर किसी बड़े बम की तरह है क्योंकि यूएई पाकिस्तान का पुराना भाई था। लेकिन अब वही भाई यूएई भारत के साथ और करीबी दोस्ती निभा रहा है।

साइबर धोखाधड़ी में फंसे नीट अभ्यर्थी को साकेत कोर्ट से झटका, जमानत देने से किया इनकार

» साकेत कोर्ट ने नीट अभ्यर्थी की जमानत याचिका खारिज की।

» अभ्यर्थी पर संगठित साइबर धोखाधड़ी में शामिल होने का आरोप।

» कोर्ट ने ठोस सबूतों और गंभीर अपराध का हवाला दिया।

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

दक्षिणी दिल्ली। साकेत कोर्ट ने नीट की तैयारी कर रहे 18 वर्षीय एक अभ्यर्थी को जमानत देने से इनकार कर दिया है। उस पर संगठित साइबर धोखाधड़ी में सक्रिय होने का आरोप है। कोर्ट ने कहा कि उसके खिलाफ मिले ठोस सबूतों को देखते हुए इस मामले में उसकी भूमिका केवल 'मामूली' नहीं है। अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश विनोद कुमार गौतम ने आरोपित अबुजर गफ्फारी की जमानत याचिका खारिज कर दी।

अबुजर पर बीएनएस की धारा धारा 318 (4) (धोखाधड़ी और बेईमानी से संपत्ति की सुपुर्दगी के लिए प्रेरित करना), 112 (3) (अपराध का दुष्प्रेरण), 317(2) (चोरी की संपत्ति प्राप्त करना), 61(2) (आपराधिक षड्यंत्र), 49 (आत्महत्या का दुष्प्रेरण) और 3(5) (सामान्य आशय) के तहत अपराध करने का आरोप है। साथ ही उस पर सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम की धारा 66(डी) (पहचान बदलकर साइबर धोखाधड़ी) के तहत भी आरोप लगाए गए हैं।

'आवेदक की भूमिका मामूली नहीं'

कोर्ट ने छह अप्रैल के अपने आदेश में कहा कि आवेदक की जो भूमिका बताई गई है, वह मामूली नहीं है। संगठित साइबर धोखाधड़ी से जुड़े आर्थिक अपराधों के समाज और वित्तीय प्रणालियों पर गंभीर परिणाम होते हैं और इनसे सख्ती से निपटा जाना आवश्यक है।

कोर्ट ने कहा कि आरोपों की प्रकृति को देखते हुए, इस संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता कि आवेदक गवाहों को प्रभावित कर सकता है या सबूतों के साथ छेड़छाड़ कर सकता है। इसलिए यह कोर्ट आवेदक को जमानत देने के पक्ष में नहीं है। कोर्ट ने यह भी कहा कि चल रही जांच में इस बड़े षड्यंत्र में अन्य व्यक्तियों की संलिप्तता का पता लगाया जाना अभी बाकी है।

क्या है मामला?

आवेदक (गफ्फारी) बैंक खाते खुलवाने, कई खातों के माध्यम से धनराशि का लेन-देन करने और उस धनराशि को क्रिप्टोकरेंसी में बदलने में सक्रिय रूप से शामिल था, जो प्रथम दृष्टया एक सुनियोजित और व्यवस्थित गतिविधि को दर्शाता है। अभियोजन पक्ष ने इस बात पर भी जोर दिया कि आरोपित से जुड़े 30-40 बैंक खाते 'नेशनल साइबर क्राइम पोर्टल' पर दर्ज कई शिकायतों से जुड़े हुए थे।

कोर्ट ने यह भी पाया कि आरोपित के विभिन्न एटीएम से नकद निकालते और जमा करते हुए सीसीटीवी फुटेज, लेन-देन की विशाल मात्रा (जिसमें लगभग 44 लाख रुपये की जमा राशि भी शामिल है), ने जमानत याचिका का विरोध कर रहे अभियोजन पक्ष के मामले को और अधिक मजबूत कर दिया।

इससे पहले बचाव पक्ष के वकील ने यह तर्क दिया था कि बरामद किए गए सबूतों को झूठे तरीके से फंसाने के लिए रखा गया है, और पुलिस द्वारा स्वतंत्र रूप से कोई बरामदगी नहीं की गई है। उन्होंने आरोपित की कम उम्र का हवाला देते हुए यह भी तर्क दिया कि उसे लगातार जेल में रखने से उसकी शिक्षा और भविष्य की संभावनाओं पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। अदालत ने इस पर जवाब दिया कि ऐसे मामलों के लिए सबूतों की आवश्यकता होती है और जमानत के इस चरण पर इनका निपटारा नहीं किया जा सकता।

मोदी और नेतन्याहू क्या राजनीतिक रूप से नाकाम

● ईरान-अमेरिका सीज़फायर की खबर अब पुरानी हो रही है। लेकिन इसराइल और भारत में इस पर बहस हो रही है। दोनों देशों में विपक्षी दलों ने पीएम नेतन्याहू और पीएम मोदी पर जबरदस्त हमला बोला है। हालांकि भारत इस मामले में पार्टी नहीं है। लेकिन कुछ बात तो है।

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

ब्यूरो प्रयागराज। ईरान-अमेरिका सीज़फायर का असर इसराइल और भारत में नज़र आ रहा है। भारत और इसराइल के विपक्षी दलों ने अपने-अपने देशों के प्रधानमंत्रियों नेतन्याहू और नरेंद्र मोदी पर हमला बोला है। अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप ने ईरान को नेस्तानाबूद करने की धमकी दी थी लेकिन वो समझौते की टेबल पर आ गए। नेतन्याहू ने अमेरिका को इस युद्ध में जबरन ढकेला और जब ट्रंप ने सीज़फायर डील की घोषणा की तो नेतन्याहू की उसमें कोई भूमिका नहीं थी। पीएम मोदी ईरान पर युद्ध थोपे जाने से तीन दिन पहले इसराइल गए थे। यह भी इसराइल का गेम था। वो दुनिया को दिखाना चाहता था कि ईरान का सदियों पुराना दोस्त भारत आज उसके साथ खड़ा है। यानी ईरान पर युद्ध थोपे जाने की मोदी की मौन सहमति थी। मोदी ने आज तक ईरान के पूर्व सुप्रीम लीडर अली खामेनेई की हत्या की निन्दा नहीं की। युद्ध के बीच में जब पाकिस्तान की भूमिका की बात कही जा रही थी तो भारत के विदेश मंत्री एस जयशंकर पाकिस्तान को दलाल देश बता रहे थे।

कांग्रेस के संचार प्रभारी और सांसद जयराम रमेश ने एक्स पर लिखा- पूरी दुनिया पश्चिम एशिया में एक तरफ यूएस और इसराइल और दूसरी तरफ ईरान के बीच चल रहे इस संघर्ष में लागू हुए दो सप्ताह के संघर्षविराम का सावधानीपूर्वक स्वागत करेगी। यह संघर्ष 28 फरवरी को ईरान के शासन के शीर्ष नेतृत्व की टारगेटेड किलिंग के साथ शुरू हुआ था। यह घटनाएं प्रधानमंत्री मोदी की बहुचर्चित इसराइल यात्रा पूरी होने के ठीक दो दिन बाद शुरू हुई थीं। इस यात्रा ने भारत की वैश्विक साख और प्रतिष्ठा को कम किया। पीएम मोदी ने ग़ज़ा में इसराइल द्वारा किए जा रहे नरसंहार और कब्जे वाले वेस्ट बैंक में उसकी आक्रामक विस्तारवादी नीतियों पर कुछ नहीं कहा।

जयराम रमेश ने कहा- युद्धविराम कराने में पाकिस्तान की भूमिका, पीएम मोदी की अत्यधिक व्यक्तिनिष्ठ कूटनीति के सार और शैली-दोनों-के लिए एक गंभीर झटका है। जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद को जारी समर्थन के कारण पाकिस्तान को अलग-थलग करने और दुनिया को यह विश्वास दिलाने की नीति कि वह एक विफल राष्ट्र है, स्पष्ट रूप से सफल नहीं हुई है। जैसा कि डॉ. मनमोहन सिंह ने मुंबई आतंकी हमलों के बाद कर दिखाया था। यह तथ्य कि एक दिवालिया अर्थव्यवस्था (पाकिस्तान की), जो पूरी तरह बाहरी डोनर्स की मदद पर निर्भर है, और कई मायनों में एक टूटे हुए देश ने ऐसी भूमिका निभा ली, पीएम मोदी की कूटनीतिक रणनीति और नैरेटिव प्रबंधन पर गंभीर सवाल खड़े करता है। उन्होंने या उनकी टीम ने यह भी कभी नहीं बताया कि ऑपरेशन सिंदूर को 10 मई 2025 को अचानक और तत्काल क्यों रोक दिया गया। जिसकी पहली घोषणा अमेरिका के विदेश मंत्री ने की थी और जिसके लिए अमेरिकी राष्ट्रपति तब से लगभग सौ बार श्रेय ले चुके हैं।

कांग्रेस के वरिष्ठ नेता ने कहा- हर जगह एक स्पष्ट राहत की भावना है। विदेश मंत्री ने पाकिस्तान को दलाल कहकर खारिज किया था। लेकिन अब स्वयंभू विश्वगुरु पूरी तरह एक्सपोज हो चुके हैं। उनका स्वयं घोषित 56 इंच का सीना सिमटकर रह गया है। उनकी कायरता न केवल इसराइल की आक्रामकता पर, बल्कि व्हाइट हाउस में बैठे उनके करीबी मित्र द्वारा इस्तेमाल की जा रही पूरी तरह अस्वीकार्य और शर्मनाक भाषा पर भी उनकी चुप्पी से पता चलती है।